ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

फाल्गुनी अमावस्या
विक्रमी सम्वत् 2079
की हार्दिक शुभकामनाएं।

अमर ज्योति

वर्ष : 74 फरवरी, 2023 अंक : 2 मूल्य : 150 रु. (वार्षिक)

प्रकाशक :
बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक
डॉ. मनबीर

सह संपादक
श्रीमती अनिला बिश्नोई

कार्यालय पता :
'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125 001 (हरियाणा)
दूरभाष : 80590-27929
94670-90729
email: editoramarjyotipatrika@gmail.com
editor@amarjyotipatrika.com
Website : www.amarjyotipatrika.com

सभा कार्यालय दूरभाष :
फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक : ₹ 150
25 वर्ष : ₹ 1300

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें"

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

'अमर ज्योति' का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सबद-3	3
सम्पादकीय: सामाजिक पत्रों में ही देशोत्थान निहित है	5
साखी	6
पारिस्थितिकी असंतुलन और जाम्भाणी दर्शन में समाधान	8
तेजोजी चारण के डिंगल गीत और उनका अर्थ	10
भारतीय परंपरा का शाश्वत उत्सव: वसंत पंचमी	13
"Indian Culture and Relevance of Environmental Thought of Bhakti Saint Guru Jambhoji"	17
बधाई सन्देश	21
हरजस	22
मजबूर नहीं, मजबूत बनो	23
परमार्थ की खोज करो ऐ प्राणी!	24
आन देव को चित ना लावो	27
शुद्ध पुरुषार्थ है 'आत्म दर्शन'	29
कविता: पेड़ (पर्यावरण)	30
जल संरक्षण का महत्त्व एवं तकनीकें	31
कविता: फरवरी, देखो समाचार-पत्र है आया	34
आधुनिकता, धर्म और भारत	35
दिग्भ्रमित युवाओं का मार्गदर्शक: सनातन धर्म	37
कामरेड स्व. सहीराम जी जौहर	39
कविता: जन्मशताब्दी	40
कहानी: काश! मैं मोबाइल होती	41
सामाजिक हलचल	42

सबद-3

दोहा

वीदा जोधावत कहै, सोरम आवै देव।
डील तुम्हारो महीम है, हमें बतावो भेव॥

उपर्युक्त सबद को सुन करके जोधाजी के पुत्र वीदा ने पूछा कि हे देव! आपके शरीर से सुगन्ध आ रही है, क्या आपने शरीर पर कोई सुगन्धित इत्र आदि लगा रखा है? या प्राकृतिक रूप से ही सुगन्धी निसृत हो रही है? इसका निर्णय बताओ, आपकी अति कृपा होगी। तब गुरु जी ने सबद कहा-

सबद-3

मोरे अंग न अलसी तेल न मलियो, ना परमल पिसायो।

भावार्थ- हे वीदा! मेरे इस शरीर पर किसी भी प्रकार का अलसी आदि का सुगन्धित तेल या अन्य पदार्थ का लेपन नहीं किया गया है क्योंकि मैं यहाँ सम्भराथल पर बैठा हुआ हूँ, यहाँ ये सुगन्धित द्रव्य उपलब्ध भी नहीं है और न ही इनकी मुझे आवश्यकता ही है।

जीमत पीवत भोगत विलसत दीसां नाही, म्हापण को आधारूं।

पृथ्वी का गुण गन्ध है जो भी पार्थिव पदार्थों का शरीर रक्षा के लिये सेवन करेगा, उस शरीर में दुर्गन्ध अवश्य ही आयेगी, किन्तु जम्भेश्वर जी कहते हैं कि हे वीदा! मुझे इस शरीर रक्षार्थ इन पृथ्वी आदि पांच द्रव्यों की आवश्यकता नहीं पड़ती, क्योंकि परमात्मा तो सभी का आधार है। परमात्मा का आधार कोई नहीं होता है। वह परमात्मा पंच भौतिक शरीर धारण करता है तो भी अन्य सांसारिक जनों की भांति खाना-पीना, भोग-विलास आदि नहीं करता, वे अत्यल्प आवश्यकतानुसार आहार यदि करते हैं तो वह आहार दुर्गन्ध आदि विकार उत्पन्न नहीं कर सकता। इसलिये हमारा शरीर सुगन्ध वाला है, न कि दुर्गन्ध वाला।

अड़सठ तीर्थ हिरदै भीतर, बाहर लोका चारूं।

अड़सठ स्थानों में प्रसिद्ध तीर्थ तो बाह्य न होकर हृदय के भीतर ही है अर्थात् जिस प्रकार से अड़सठ तीर्थ हृदय में प्रवाहित होते हैं, योगी लोग उनमें स्नान करते हैं, उसी प्रकार से चेतन सत्ता भी हृदय देश में प्रत्यक्ष रूपेण रहती है। उसमें ही जो रमण करेगा, उसके शरीर में कैसी दुर्गन्धी, वह ज्योतिर्मय ईश्वर तो सदा-सर्वदा सुगन्धमय ही है तथा जिनकी वृति बाह्य शरीर में ही विचरण करती है। परमात्मा की झलक से वंचित हो चुकी है तथा बाह्य पदार्थों का आश्रय ग्रहण किया है, ऐसे जनों का शरीर दुर्गन्धमय ही होगा। इसलिये हे वीदा! मैं तो अड़सठ तीर्थों में स्नान नित्य प्रति करता ही हूँ, यहाँ पर सांसारिक जनों की भांति व्यवहार तो मेरा लोकाचार ही है।

नान्ही मोटी जीया जूणी, एति सांस फूरंतै सारूं।

सृष्टि के छोटे तथा बड़े जीवों की उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय के बीच का समय एक श्वांस का ही होता है। जितना समय श्वांस के आने तथा जाने में लगता है उतने ही समय में परमात्मा सम्पूर्ण जीवों की सृजना कर देते हैं, वह सृजन कर्त्ता मैं ही हूँ।

वासंदर क्यूं एक भणिजै, जिहिं के पवन पिराणों।

यहाँ पर उपर्युक्त वचनों को श्रवण करने पर वीदा के अन्दर कुछ क्रोध उत्पन्न हो गया, इसलिये जम्भेश्वर जी ने कहा- हे वीदा? तूँ एक मात्र क्रोध रूपी अग्नि को ही क्यों बढ़ावा देता है। यह क्रोध तुम्हारे लिये विनाशकारी है। अग्नि और क्रोध में सादृश्यता बताते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार से अग्नि की प्राणवायु होती है उसी प्रकार से क्रोध का प्राण भी वायु रूप झट से निकला हुआ कठोर वचन होता है।

आला सूका मेल्है नाही, जिहिं दिश करै मुहाणौं।

जब अग्नि प्रज्ज्वलित हो जाती है तब न तो हरी वनस्पति को छोड़ती है और न ही शुष्क वनस्पति को छोड़ती है, दोनों को ही भस्म कर देती है। उसी प्रकार से क्रोध भी जब बढ़ जाता है तो न तो दोषी को छोड़ता और न ही निर्दोषी का ख्याल करता, विवेक शून्य होकर दोनों पर बराबर ही अपराध कर देता है। अग्नि तथा क्रोध दोनों ही जिस तरफ बढ़ेंगे, उस तरफ तबाही मचा देंगे।

पापे गुन्है वीहे नाही, रीस करै रीसाणौं।

अग्नि तथा क्रोध दोनों ही जिस तरफ बढ़ेंगे अर्थात् जिस व्यक्ति को भी अपना लक्ष्य बनायेंगे, उस समय न तो उसे पापी का ज्ञान रहेगा और न ही गुणी का ज्ञान रहेगा। क्रोध में व्यक्ति जब क्रोधित हो जाता है तो निर्णय लेने में असमर्थ हो जाता है। उसका कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का विवेक भ्रष्ट हो जाता है।

बहूली दौरे लावण हारूं, भावै जाण मैं जाणूं।

यह क्रोध ही सभी दुर्गुणों की जड़ है। एक क्रोध से ही सभी दुर्गुण उत्पन्न हो जाते हैं और ये दुर्गुण बार-बार नरक में ले जाने वाले होते हैं। इस जीवन में दु:खों को भोगते हैं तथा परलोक भी दु:खमय बन जाता है। अग्नि हाथ में चाहे जानकर ले या अनजान में लें, वह तो जलाएगी ही। इस प्रकार से क्रोध भी चाहे जानकर करें या अनजान में करें वह तो दुखित करेगा ही।

न तूं सुरनर न तूं शंकर, न तूं राव न राणों।

हे वीदा! न तो तूँ देवता है और न ही तू मानव है तथा न ही तूँ शंकर है। न तू राजा है और न ही तू राणा है।

काचै पिण्ड अकाज चलावै, महा अधूरत दाणों।

तेरा यह शरीर तो कच्चा है इस पर तूँ इतना अभिमान क्यों करता है? यह कभी भी टूट सकता है तथा इस स्थिर काया से तूँ पाप करता है, यह तो धूर्तों का, दानवों का कार्य है।

मौरे छुरी न धारूं लोह न सारूं, न हथियारूं।

जब वीदा कुछ नम्रता को प्राप्त हुआ तब कहने लगा कि आप इस भयंकर वन में रहते हो, आपके पास कोई हथियार तो अवश्य ही होगा। यदि नहीं होगा, तो आपको जरूर रखना चाहिये। यह शंका उत्पन्न होने पर जम्भेश्वर जी ने कहा कि मेरे पास लोहे की बनी हुई धारीदार, पैनी छूरी या अन्य हथियार नहीं है तब वीदे की शंका ने आगे पैर पसारा कि आखिर आपके शत्रु क्यों नहीं? आगे जाम्भोजी ने बताया।

सूरज को रिप बिहंडा नाही, तातै कहा उठावत भारूं।

हे वीदा! सूर्य का शत्रु जुगनूं-आगिया नहीं हो सकता, क्योंकि शत्रुता तथा मित्रता, ये दोनों बराबर वालों में ही होती है इसलिये मैं तो सूर्य के समान हूँ तथा अन्य सांसारिक शत्रु लोग तो जुगनूं के समान ही है। सूर्य जब तक उदय नहीं होता, तब तक जुगनूं चम-चम करता है। सूर्य उदय होने पर तो लुप्त हो जाता है। इसलिये मैं यह शस्त्र रूपी लोहे का भार क्यों उठाऊँ? क्योंकि मेरा शत्रु कोई नहीं है। अथवा जिस प्रकार से सूर्य को शत्रु विनाश नहीं कर सकता, उसी प्रकार से मेरा भी शत्रु कुछ भी नहीं कर सकता, तो शरीर की रक्षा के लिये मैं भार क्यों उठाऊँ।

जिहिं हाकणड़ी बलद जू हाकै, न लोहै की आरूं।

मेरे पास तो जो बैल हांकने की साधारण लकड़ी होती है उसके अग्र भाग में लोहे की छोटी सी कील लगी रहती है उसके बराबर भी लोहे का शस्त्र नहीं है।

-साभार 'जम्भसागर'

समय नहीं है!

बंगाल में एक बड़े धनी सेठ थे। उनके यहां एक ग्वालिन आयी। सूर्य अस्त होने में समय कम था। वह बोली- पैसा देन (पैसा दीजिये)। उसके मुनीम ने कहा- 'थोड़ी देर ठहरो।' ग्वालिन बोली- 'आर बेला नाय (समय नहीं है)।' मुनीम ने कहा- 'थोड़ा ठहरो।' उसने फिर कहा- 'आर बेला नाय।' तीन बार उस स्त्री ने कहा- 'सूर्य डूब रहा है, समय नहीं है। सेठ ने उसको पैसा दिलवा दिया और उसी समय सबका हिसाब नक्की करके चल पड़ा। बोला- 'समय नहीं है। हमारा सूर्य अस्ताचल में जा रहा है।' उस सेठ को ग्वालिन का इतना ही उपदेश लग गया और प्रभु के शरण होकर वह महान् भक्त हो गया।

हमारा भी यही हाल है, समय कहां है? भगवान् कहते हैं- 'अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम्।' (गीता 9/33)। इसलिये तू सुखरहित और क्षणभंगुर इस मनुष्य शरीर को प्राप्त होकर निरन्तर मेरा ही भजन कर।

साभार -ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्री जयदयाल जी गोयन्दका

संपादकीय सामाजिक पत्रों में ही देशोत्थान निहित है

यह संपादकीय 'अमर-ज्योति' मासिक पत्रिका वर्ष 1951 के जून अंक में कर्मयोगी वरिष्ठ पत्रकार स्वर्गीय श्री सहीराम जौहर ने लिखा था जो 'अमर ज्योति' पत्रिका के प्रथम संपादक थे। 71 वर्ष पूर्व लिखा गया यह संपादकीय आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उस दौर में था। स्व. श्री जौहर जी के जन्मशताब्दी अवसर पर 'अमर ज्योति' पत्रिका परिवार उनके अविस्मरणीय योगदान के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए उनके सम्मान में इस संपादकीय को यहां पर पुनः प्रकाशित कर उनको भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

यूं तो देश के अंदर हजारों और लाखों की तादाद में पत्र और पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं। एक प्रकार से देश में पत्रों की बाढ़ सी आई हुई है। चाहे वह हिंदी, अंग्रेजी और उर्दू आदि किसी भी भाषा में क्यों न हो। समाज सुधार और देशोत्थान के लिए पत्रों का प्रकाशन वास्तव में है भी परमावश्यक। इस दृष्टि से तो हमारा देश कोई विशेष पीछे नहीं, क्योंकि देश का कोई भी ऐस प्रांत नहीं, जहां पर 500-700 दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित न होती हों। वह बात अलग है कि हमारे पत्रों का उद्देश्य चरित्र निर्माण, समाज सुधार और देशोत्थान का न रहकर केवल व्यापार मात्र रह गया है। लोगों ने समाचार पत्रों को रुपया कमाने की मशीन समझ लिया हैं। बहुत कम ऐसे समाचार पत्र हैं जो देश में निस्वार्थ भाव से निर्माण कार्य कर रहे हैं। शेष सब के सब स्वार्थ में वशीभूत होकर अपने उद्देश्यों से गिर गए हैं, चाहे वह सामाजिक और धार्मिक ही क्यों न हो, सामाजिक और धार्मिक तो केवल नाम के हैं उनके अदंर मसाला होता हैं, गंदे विज्ञापन, चलचित्रों की कहानियां और अश्लील अभिनय के फोटो जिनको भोला भारतीय कला कहकर पुकारता हैं । ये चीजें हैं जो देश को पतन की और ले जा रही हैं।

भारतीय समाचार पत्रों के आज दो मुख्य दृष्टिकोण हैं-एक रुपया कमाने का और दूसरा राजनीति का, लीडरी की भूख का, मिनिस्ट्री की कुर्सी का। आज का मानव सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र को छोड़कर जो सुखमय जीवन के जरूरी अंग है राजनैतिक क्षेत्र की ओर बड़ी तीव्र गति से भागता है। बेचारे बहुतों का तो इस दौड़ में ठोकरें खाकर कचुमर ही निकल जाता है और कुछ बड़ी मुश्किल से निश्चित स्थान तक पहुंचते हैं। परंतु किसी प्रकार का व्यावहारिक ज्ञान और अनुभव न होने के कारण राज्य सत्ता की चोटी पर अधिक समय तक टिक नहीं सकते हैं और जल्दी ही गिर जाते हैं। उनकी दशा ठोकर खा-खा कर बीच में रहे साथी से भी बदतर होती है, फिर वह उठने का साहस नहीं करते और करते हैं तो सतर्क होकर।

राजनैतिक क्षेत्र की ओर दौड़ लगाने वाले लोग कान का मैल निकाल कर सुन लें, जब तक धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र को भली-भांति समझ कर पार नहीं करेंगे, तब तक राजनीतिक क्षेत्र में सफलता अंसभव हैं और अगर मिली तो भी महान कष्टों को साथ लिए हुए और क्षणिक। धार्मिक और सामाजिक यह दोनों ही क्षेत्र राजनैतिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए एक प्रकार से सोपान (सीढ़ी) सिद्ध हुए हैं। इसलिए मिनिस्ट्री की कुर्सी की तरफ देखने से पहले इनको जानना बहुत जरूरी है। आज हम अपनी आंखों से देश की तबाही का नाटक देख रहें हैं ऐसी गलती का हर नतीजा है जो हम सबको भुगतना पड़ रहा है। नाटक किस ढंग से खेला जा रहा है यह प्रत्यक्ष रूप से आपके सामने है प्रमाण की आवश्यकता नहीं।

आखिर ऐसा क्यों? देश सदियों तक गुलाम रहा पहले मुसलमानों का और बाद में अंग्रेजों का। उन्होंने अपने शासनकाल में भारतीय शिक्षा प्रणाली पर कठोर कुठाराघात कर प्राचीन शिक्षा केंद्रों (गुरु आश्रमों) को समाप्त कर दिया। उनके स्थान पर पाश्चात्य ढंग से हाई स्कूल और कॉलेज खोले जो आज आजाद हिन्दुस्तान में उसी ढंग से चल रहे हैं। धीरे-धीरे भारतीयों के हृदय से गुरु आश्रम में दी जाने वाली समाज सुधार की, शांति और देश-प्रेम की शिक्षा भुलाई गई। गुरु माता-पिता की सेवा पर जीवन देने वाले विद्यार्थियों के हृदय में उनके प्रति नफरत की भावना पैदा की

क्रमशः पेज 7 पर

साखी परमानन्दजी बणियाल कृत साखी

बाबो आवियो आदि विसनु, सम्भराथल साचो धणी।
परच्या पवन छतीसूं, सपत दीप शोभा सुणी।
सपत दीप शोभा सुणी नै, आवियो हरि आप।
खुध्या तिसना नींद नहीं, सोक नहीं संताप।
छाया खोज न आपदा नै, कलू आवियो किसन।
करतार पार पावै कवण, आवियो आदि विसन।
सम्भराथल सांचो धणी।1।
सरब धरम संसार, परगट किया परम गुरु।
पाप धरम निवेड़, न्यारा किया सुगर गुरु।
न्यारा किया सुगर गुरु नै, साच शील सिनान।
कारण किरिया होम जप तप, सुपह सुमार्ग दान।
आन भरम कुथान पूजा, अन्तरा सर्वस निवार।
विष्णु जाप रू विष्णु पूजा, सरब धर्म संसार।
परगट किया परम गुरु।2।
सिकंदर बाबर बादशाह, पठाण चगदां परचिया।
सांगा राणां चितोड़, रायसल बरसल सिसोदिया।
रायसल बरसल सिसोदिया नै, दूदो सांतल राव।
बीको बीदो हमीर बाघो, जोध दवादस जांण।
जेसाण रावल जेतसी, अजमेर करमसी पुंवार।
महमद खां हारण खां सेखसदो, सिकन्दर बादशाह बाबर।
पठाण चगथा परचिया।3।
और परच्या कै एक अपार, यारां सुत नाती दोहितरां।
जो जो उतम जीव, सतगुरु का सेवक खरा।
सतगुरु का सेवक खरा नै, सदा श्याम सहाय।
विसनु सहसी वंश बधसी, पाप वंश खै हो जाय।
गिण राजवी ज्ञान मांहि, प्रजा न लहूं पार।
नव खण्ड देसरा नरपति, और परच्या केई अपार।
यारां सुत नाती दोहितरां।4।
दरसण परसण देव, करणी चालै गुरु कही।
साचा साचो श्याम, सतगुरु जहां साथे सही।
सतगुरु जहां साथे सही नै, मोख पावां मन सवां।
अमि कचोला भोग मनसा, सदा आनन्द नित नूंवा।
हिंडोल हिंडण पिलंग पोढ़ण, सरस मनवां सेव।
परमानन्द गावै मुक्ति पावै, दरसण परसण देव।
करणी चालै गुरु कही।5।

भावार्थ- बाबो आदि विष्णु ही यहां सम्भराथल पर सच्चे स्वामी के रूप में आये हैं। जिनके उपदेशों को धारण करके तीनों वर्णों के लोग पूर्ण-रूपेण धार्मिक हो गये हैं। जिनकी शोभा सप्त द्वीपों में लोगों ने सुनी थी। हरि आप स्वयं ही यहां पर आये है। बाबो जाम्भोजी को न तो अन्य संसार के लोगों की तरह भूख ही लगती और न ही प्यास लगती है। और न ही तृष्णा, नींद, शोक, मोह आदि ही संतप्त करते है। जिनके शरीर में माया की छाया भी नहीं है। उन्हें आपदा कैसे सता सकती है क्योंकि इस कलयुग में कृष्ण ही आये है। उस कर्त्ता-धर्त्ता सर्व-समर्थ का पार कौन पा सकता है जो आदि विष्णु ही यहां पर आये है।1।

परम गुरु ने संसार के सभी धर्मो के तत्व को बिश्नोई धर्म के रूप में प्रगट किया है। पाप और धर्म का विवेक करके अलग कर दिया है, ऐसे सतगुरुदेव सम्भराथल पर प्रगट हुए हैं। सुगुरु ने सत्य, शील, स्नान, शुभ क्रियाऐं, होम, जप, तप, दान, सुमार्ग, आन देवता की पूजा आदि का भेद बताकर दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया है। केवल एक विष्णु की ही पूजा तथा जप बतलाया, यही संसार के सभी धर्मो का निचोड़ है।2।

सिकन्दर लोदी, बाबर, बादशाह, पठाण, चगथ, सांगारांणा, रायसल, बरसल, सिसोदिया, दूदो मेड़तियो, सांतल राव नरेश, बीको, बीदो, हमीर,

बाघो, जोधाजी ये बारह राजा गुरु देव के अनुयायी बने थे। जैसलमेर के राव जेतसी, अजमेर के करमसी पुंवार, महमद खां नागौरी, हारण खां, सेख सदो, लूणकरण आदि भी धर्म के मार्ग पर अपना तथा अपनी प्रजा का उद्धार किया था।3।

और भी बहुत से राजा एवं उनके पुत्र, पौत्र, दौहित्र आदि सत्य मार्ग के अनुयायी बने थे। जो-जो उतम जीव थे, वे सभी सतगुरु के पक्के सेवक थे। श्याम सदा ही उनकी सहायता भी करते हैं। विष्णु ने जिनकी सहायता की, उन्हीं का वंश वृद्धि को प्राप्त हुआ तथा जो पापी थे उनके वंश का विनाश हो गया। कवि कहते है कि ये राजा लोग तो गिनती में आ गये, परन्तु प्रजा का तो कोई पार ही नहीं है। नव खंड देश के नरपति तथा अन्य कई देशों के राजाओं का पार ही नहीं है।4।

सतगुरु के पास दर्शन करते तथा उनके चरण स्पर्श करते थे। जैसा गुरु कहते वैसा ही करते थे। जो सच्चे थे उनके पास में श्याम कृष्ण थे। जिनके सतगुरु साथ है वे ही जन जीवन में युक्ति और मृत्यु पर मुक्ति को प्राप्त करते हैं। मुक्ति की प्राप्ति हो जाने से वहां अमृत की प्राप्ति इच्छानुसार होती है। वहां पर सदा ही आनन्द की अभिवृद्धि होती रहती है। शयन करने के लिये पलंग आदि उतम वस्तुओं की प्राप्ति स्वत: ही हो जाती है। परमानन्द जी गाते हुए कहते हैं कि वे भक्त लोग मुक्ति प्राप्त करते हैं, जो गुरु के कथन पर चलते हैं। परमानन्द जी की इन दो साखियों में जितने भी नाम आये हैं उनकी कथा विस्तार से जम्भसार या जाम्भा पुराण में पढ़ें।5।

साभार- साखी भावार्थ प्रकाश

पेज 5 का शेष....

गई। विद्यार्थियों को पढ़ाए गए शहजादी और शहजादे के अश्लील किस्से। उन्हें शिक्षा दी गई छल-कपट, धोखा और फरेब की। लोग अपनी प्राचीन संस्कृति के वास्तविक स्वरूप को भूलकर धीरे-धीरे पाश्चात्य सभ्यता के गंदे नाले में बह गए। इस विशाल देश में बसने वाली अनेक जातियां पथभ्रष्ट हो गई। समाज छिन्न-भिन्न हो गया, धर्म व्यवस्था टूट गई। लोग भयभीत निराश और दुखी होकर किसी महान आत्मा का आसरा खोजने लगे। ईश्वर ने दुखी जनता की पुकार सुनी और समय-समय पर कुछ एक महान आत्माएं पीड़ितों की रक्षार्थ प्रकट हुई जिसमें महात्मा गांधी को छोड़कर गोस्वामी तुलसीदास, भगवान जम्भेश्वर जी और स्वामी दयानंद आदि ने कोई विशेष रूप से राजनैतिक लड़ाई नहीं लड़ी, बल्कि समाज सुधार के कार्यों और अपनी रचनाओं के द्वारा ही भारतीय संस्कृति की रक्षा की और देश को बचाया। तुलसीदास, भगवान जम्भेश्वरजी, स्वामी दयानंद और महात्मा गांधी, ये चारों ही अपने-अपने कार्यों में सफल हुए। महात्मा गांधी इन महापुरुषों से 450 वर्ष बाद में आए। उन्होंने अपने जीवन काल में केवल दो लड़ाइयां लड़ी। पहली राजनैतिक और दूसरी सामाजिक। गांधीजी विजयी हुए, लेकिन केवल राजनैतिक लड़ाई में, सामाजिक में नहीं। सामाजिक व्यवस्था ज्यों की त्यों रही, उसमें कोई सुधार नहीं हुआ, बल्कि अन्य कुरीतियों के साथ सांप्रदायिक भेदभाव की भावना की बढ़ोतरी और अधिक हुई। समाचार पत्रों ने तो अपने उत्तरदायित्व का पालन ऐसे किया कि सांप्रदायिक भावनाओं को रोकने की अपेक्षा कहीं अधिक भड़काया। फल यह हुआ कि आज देश के अंदर बसने वाली तमाम जातियां एक-दूसरे को भेदभाव और नफरत की निगाह से देखती हैं अपने से दूसरे को गैर समझती हैं।

ऐसी भीषण परिस्थिति में देश के कोने-कोने में बिखरे हुए बिश्नोई समाज को संगठित, शिक्षित, चरित्रवान और शक्तिशाली बनाने के लिए 'अमर-ज्योति' पत्रिका जून 1950 से समाज में कार्य कर रही है। पत्रिका अपने कार्य में कितनी सफल हुई है इसका अनुमान तो पाठक स्वयं लगाएं, लेकिन इतना अवश्य है कि पत्रिका जिस दिन से आरंभ हुई है दिन-प्रतिदिन उन्नति की ओर अग्रसर होती जा रही है। यदि 'अमर-ज्योति' द्वारा हर समाज और हर जाति के लोग शिक्षित, चरित्रवान और शक्तिशाली हुए तो देश की ताकत बढ़ेगी। देश की ताकत बढ़ने का अर्थ है हमारी स्वतंत्रता स्थायी बनेगी और हम पुन: अपनी सदियों से खोई हुई संस्कृति को प्राप्त कर सकेंगे।

पारिस्थितिकी असंतुलन और जाम्भाणी दर्शन में समाधान

ईश्वर का निवास कण-कण में व्याप्त है और इसी मूल भावना पर हमारी सनातन संस्कृति आधारित है। वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा की जनक हमारी सनातन संस्कृति है और इसके विस्तार रूप में जाम्भाणी दर्शन तो प्रकृति को ही ईश्वर की संज्ञा देता है। प्रकृति के साथ प्रेम और सहअस्तित्व की अवधारणा ही जाम्भाणी दर्शन का पर्यावरणीय मूल है। गुरु जम्भेश्वर भगवान अपनी वाणी में इसी मूल भावना का उदघोष करते है।

'रूप अरूप रमूँ पिंडे ब्रम्हंडे, घट-घट-अघट रहायो'।

(सबद 20)

वर्तमान समय में यदि हम चारों ओर नजर दौड़ाएं तो देखते हैं कि मानव विकास की अंधी दौड़ में संलग्न है और स्वयं के विनाश का कारण बनता जा रहा है। प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन की वजह से अनेक प्रजातियां विलुप्ति की कगार पर है और अनेक लुप्त हो चुकी हैं। प्रजातियों की इस विलुप्तता ने जैव पारिस्थितिकी में गंभीर असंतुलन पैदा कर दिया है। पारस्परिक जैव संघर्ष और पेड़-पौधों की विलुप्ति के कारण पर्यावरणीय रूपरेखा में आमूल-चूल बदलाव देखने को मिल रहा है।

मनुष्य द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये प्राकृतिक संसाधनों का अतिशय दोहन किया जा रहा है जिससे जीव-जंतुओं एवं पौधों के आवासों का ह्रास एवं विखंडन हो रहा है। मानव द्वारा अति दोहन से पिछले 500 वर्षों में बहुत-सी जातियां विलुप्त हो गई हैं। बढ़ती हुई जनसंख्या और आर्थिक विकास के लिए बेतहाशा कटाई के कारण भी पारिस्थितिकी असंतुलन बढ़ता जा रहा है। जैविक व पर्यावरणीय पारिस्थितिकी में मनुष्य सबसे ऊपर श्रेणी पर बैठा है, इसलिए एक ओर जहां मनुष्य सभी का भोक्ता है, वहीं असंतुलन की परिस्थिति का मुख्य कारण भी है। औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के कारण वनों का विनाश हो रहा है। वनों पर आधारित जीवों का असंतुलित पलायन हुआ है और सूक्ष्म जीव तो लुप्तप्राय ही हो चुके हैं। कृषि की नवीन तकनीकों ने भी असंतुलन को बढ़ाया ही है। जरूरत से ज्यादा रासायनिक उर्वरकों के इस्तेमाल से अनेक पौधों और जीवों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा है। इन सभी कारणों का पर्यावरण पर बड़े रूप में ज्यादा बदलाव यह देखने को मिला है ही, मौसम चक्र में बदलाव आ चुका है।

अनियमित बारिश से फसलों का नुक्सान हो जाता है और उन फसलों पर आधारित जैव श्रृंखला का भी अंत हो जाता है। सर्दी के मौसम में गर्मी व गर्मी में सर्दी से फसल की पैदावार गिर जाती है जिससे मनुष्य को अन्य प्राकृतिक संसाधनों का अधिक दोहन करना पड़ता है। इन सभी कारणों के पीछे यदि मनुष्य स्वयं है तो समाधान भी मनुष्य स्वयं है। बिश्नोई पंथ में गुरु जाम्भोजी ने इस असंतुलन को को रोकने के लिए मनुष्य को कदम-कदम पर आगाह किया है और इसका सबसे उत्कृष्ट उदाहरण है जीवों पर दया करना और पेड़-पौधों को काटने की सख्त मनाही। गुरु जाम्भोजी मनुष्य को जीवों का सबसे बड़ा संरक्षक मानते हुए उसे सभी जीवमात्र पर दया रखते हुए जीवन जीने का सन्देश देते हैं। गुरु जम्भेश्वर द्वारा प्रतिपादित 29 नियमों में इसका स्पष्ट उल्लेख है।

'जीव दया पालणी रूंख लीलो नहीं घावै।'

इसी का कारण रहा है की बिश्नोई समाज विगत 550 वर्षों से पर्यावरण का सजग प्रहरी के रूप में अपने पर्यावरणीय मूल्यों का निर्वहन कर रहा है। बिश्नोई बाहुल्य क्षेत्रों में स्वछंद विचरण करते वन्य प्राणी एवं खेतों व सड़कों के किनारों व बीच में खड़े पेड़ इस बात का सशक्त प्रमाण है। चूँकि बिश्नोई पंथ का प्रादुर्भाव रेगिस्तान क्षेत्र से हुआ है, अत: गुरु जाम्भोजी

ने रेगिस्तान की पारिस्थितिकी पर जीवन जीने का जो सन्देश दिया, वह आज भी बदस्तूर जारी है। रेगिस्तान की पारिस्थितिकी के मुख्य दो घटक हैं खेजड़ी और हिरण। खेजड़ी एक ऐसा वृक्ष है जो रेगिस्तान की सभी प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपनी जड़े जमा कर न केवल मृदा के कटाव व अपरदन को रोकता है बल्कि पर्यावरण की नमी के संतुलन को बनाते हुए असंख्य जीवों को आश्रय प्रदान करता है। खेजड़ी के पेड़ की पत्तियां भूमि के लिए एक अच्छी उत्पादक खाद का भी कार्य करती हैं।

खेजड़ी की जड़ें भूमि के जलस्तर को छू जाती है और बिना किसी ऊपरी पानी के भी खेजड़ी का पेड़ अपना पालन-पोषण कर लेता है। इसी महत्व के कारण खेजड़ी को राजस्थान के रेगिस्तान ही नहीं अपितु विश्व के सभी रेगिस्तानों में सामजिक व सांस्कृतिक संरक्षण प्राप्त है। हमारे लिए बहुत ही गौरव का विषय है कि अनेक धार्मिक व सांस्कृतिक विविधताओं को समेटे खेजड़ी का पेड़ संयुक्त अरब अमीरात का राष्ट्रीय पेड़ है। राजस्थान में खेजड़ी की व्याप्तता के आधार पर इसे अनेक नाम भी दिए जाते हैं और घर खेत में तो यह परिवार के सदस्य के रूप में मान्यता प्राप्त है।

खेजड़ी के पेड़ की पारिस्थितिकी हिरण से बहुत मजबूती से जुड़ी हुई है। हिरण एक ऐसा शर्मीला वन्य प्राणी है जो गांव आबादी से दूर वन्य क्षेत्रों में निवास करता है और केवल अच्छी किस्म की खेजड़ी की सूखी सांगरी जिसे खोखा कहा जाता है, उसे ही खाता है। हिरन जब सूखी सांगरी को खाकर अपना मलत्याग करता है तो सांगरी के बीज उसी मल में रह जाते है जो हल्की सी बारिश की नमी पाकर ही पेड़ के रूप में उगना प्रारम्भ कर देते हैं। इस प्रकार हिरण खेजड़ी के प्रसार का मुख्य जैविक घटक है। दोनों एक दूसरे से इस प्रकार से अंतर्वलित है कि दोनों में से एक को भी खतरा होना सम्पूर्ण रेगिस्तान की पारिस्थितिकी को अंसतुलन में ला सकता है। बिश्नोई पंथ विगत पांच सदियों से इन दोनों की सुरक्षा हेतु रेगिस्तान के धोरों में संघर्ष कर रहा है। गुरु जाम्भोजी के समय से ही इन्हें बचाने के लिए अनेक बिश्नोई नर नारी अपनी मृत्यु को गले लगाकर इनकी रक्षा कर रहे है। बिश्नोई पंथ में गुरु जम्भेश्वर भगवान के बाद सर्वाधिक मान्यता प्राप्त कवि 'वील्हो जी' ने तो जीवों की रक्षा के लिए स्वयं के बलिदान का आह्वान किया है।

'बरजत मारे जीव तहां मर जाइये।' (वील्होजी)

करमां गौरां के बलिदान से लिखी कहानी एक ओर जहां खेजड़ली के 363 बलिदानों से अपनी उत्कृष्टता को प्राप्त करती है, वहीं इसके बाद के असंख्य बलिदानों से अपने मूल्यों को जीवित रखे हुए है। पारिस्थितिकी के इस प्रकार अंतर्संबंधित घटकों के अनेक उदाहरण हमें देखने को मिलते हैं जहां पेड़ व जीव का जीवन एक-दूसरे पर निर्भर रहता है और उनके संरक्षण का सन्देश हमें जाम्भाणी दर्शन देता है। धार्मिक व सामाजिक मान्यताओं के साथ-साथ पारिस्थितिकी के संतुलन हेतु लोकतांत्रिक व्यवस्था में मजबूत कानून व पर्यावरण के संबंध में मजबूत व पारदर्शी नीति की बहुत आवश्यकता है।

विकास के नवीन पैदा होते मॉडल जहां एक तरफ किताबी रूप में बहुत प्रभावी जान पड़ते हैं लेकिन असल में उनका खामियाजा जैव-विविधता को ही भुगतना पड़ता है। बिश्नोई समाज को विगत 5 सदियों में अपने पर्यावरणीय मूल्यों के संरक्षण की कीमत असंख्य बलिदानों से चुकानी पड़ी है, लेकिन आज भी समाज उसी दृढ़ता से कायम है। आज जरुरत है की बिश्नोई समाज के इन पर्यावरणीय मूल्यों को पारिस्थितिकी संतुलन की नीतियों में प्रमुखता से शामिल किया जाए और इनका व्यापक प्रचार-प्रसार हो।

-स्वामी सच्चिदानंद आचार्य
महंत लालासर साथरी,
नोखा, बीकानेर

तेजोजी चारण के डिंगल गीत और उनका अर्थ

हुवै हाथिये हींवरे नवे जूंने नरे,
पासरे प्रांसा न क्यौं भीम न थावै।
नफर निकंक्तफ से आय करि एकलौ,
जीतना एकलौ लीयै जावै ॥1 ॥
कासू के कोट किवाड़ जड़ीया किसुं,
खंदक कीसु खोदीयां पाफ पांणी।
असपती गजपती नरपती नहीं छूटै,
पकड़िजै पीड़ीजै काढिजै प्रांणी ॥2 ॥
तंतीये मतीये कीसुं जड़ी बुटी में,
तबीबेदार वे पाछणे डांग दीघे।
विषय बेकार चौवाही न भाज कोसुं,
किसु हुवै घणां बेसाख कीधे ॥3 ॥
ओतर असमाइ हुवै अवगतीया,
अतीया अखरे अग्याणे।
छुटीगै नहीं बंधावै ज सांमहां,
भंणा कब तेजीयो भूतषाने ॥4 ॥

भावार्थ - हाथी-घोड़े, नये-पुराने मनुष्य आदि प्राणी गंदे तालाब पर नहीं जाते हैं। अर्थात् पात्र जगह ही ये अपने कर्म हेतु जाते हैं। निकलंक का दास यदि आ जावे और कहीं भी ले जाये तो जाने के लिए तैयार है। अर्थात् सुपात्र कुछ भी असम्भव कर सकता है ॥1 ॥

आगे के भव की बात करता हुआ कवि कहता है - वहाँ न कोई किला है, न कोई किवाड़ लगे हैं, न कोई खाई खोदी है और न ही उसमें गर्म पानी भरा है। वहाँ घोड़े के मालिक, हाथी के मालिक, राजा आदि भी नहीं बचेंगे। वहाँ उन्हें पकड़ा जायेगा, पीड़ा जायेगा और काढ़ा जायेगा ॥2 ॥

तंत्र-मंत्र, जड़ी-बूटी या किसी जानकार द्वारा डाम देने से भी ये विषय विकार ठीक नहीं होंगे, चाहे कितने ही विश्वास से आप कुछ करो। इन पर नियंत्रण ईश्वर स्मरण से ही किया जा सकता है ॥3 ॥

ऐसी प्राणी अवगति में पड़ता है। उसका कुसमय जन्म होता है। ये सब अज्ञान के फलस्वरूप होता है। इन बंधनों से छुटकारा पाने के लिए कवि तेजोजी मंदिर में बैठा हुआ इन पर विचार कर रहा है और ईश्वर को स्मरण करता है ॥4 ॥

गीत - 2

उत्तम उदास गह कोई गुरमुखी,
देखि दुनियां विचार तिह वेदूं।
मुसळमांणी ध्रंम कोई नहीं मुसळमांणा,
हिंदवै ध्रमं न कोय हीदूं ॥1 ॥
काछ न वाच निकळंक नर को लहो,
नारिका पतीभ्रता सती कोई।
कुबधिये क्रम छिनांक घरि घरि घंणी,
कोम कहि जाति चिनाळ काई ॥2 ॥
रहै एकादसी नं को रोजा रहै,
अंति घंणां लघणा कर अंग न्यांने।
धीग आयोपंणौ छडि बैठा ध्रंम,
मनंमुखी कीसौ ही मुसळमांने ॥3 ॥
चारंण आचारे कोई नहीं चारंणा,
भाट आचारे न कोई भाट।
ध्रंम आयोपंणौ छडि अध्रंमिये,
बांणिये बांमंणो पर हरी वाट ॥4 ॥
एक उसताज मैं दीठ गुर मांहरो,
असोई दुंनी मां कोय न दीठो।
आपरै पंथि अनेक नर आंणिया,
पारकै पंथ किणही न पैठो ॥5 ॥
गुन्हगारे गिंवारे तसकरे बंद तांहरे,
कुलपंणे कुपाते खदकार खेली।
मुंहे दावो कियो मुसळमांणी तणौ,
मंन तै काफरी अंनै मेल्ही ॥6 ॥
जीमंणौ बोलंणौ तो हमारे जुवौ,
जीव नीवी मासंणी तहे जुवारी।
जेतली दुंनी नीलाज दुसारीय,
तेतली लाज नाही तुहारी ॥7 ॥
महळि हवाल कुंणा होयसी मांहरौ,
जक न कुकरणी कुसारि आंणी।
जाति एकज मां जीत व्रंन जीम्या,
वे मांसण्य जो दीन जुदा वांणी ॥8 ॥
तेजिया तांहरौ देखि रूख तांहरौ,
कांम मतो भावतो कान्य करियौ।
पारकै आंगणो घर पर मींदरे,
भीख मांगे नै पेट छलीयौ ॥9 ॥

गीत - 3

रातो रहमांण रसूल रीदा सुध्ग,
जीवन को पखांणा जुवौ।
बीजो श्रब फिटि करि बारहट,
हूं हारे रो बारहट हुवौ ॥1 ॥
हू बारहट हुवो हरजी तांहरो,
जीनस्य जीनस्य उपगार जुवौ।

काया रतंन नूर कापड़,
हूरां तुरी वराक हुवौ ॥2 ॥
करंम करंतो कांम सीध काया,
सीध वाच सीध वरत वखांणा।
सरब सवाद संतोष सरब सुख,
सारदा सुणो रीदा सुभीयांणा ॥3 ॥
जहमति नहीं नहीं जोख्यौ जुरा,
नहीं जामंण गरंणा जहां।
करम सुफाति दवारे जैंह कलमूं,
ताजदीन बारट तहां ॥4 ॥

भावार्थ – हे प्राणी, रहमाण (विष्णु) के शुद्ध रंग में रंग जाओ, इस जीवन का उद्देश्य भी यही है। कवि अपने आपको फटकारता हुआ कहता है कि हे बारहट, अन्य सबको छोड़ दे, मैं तो विष्णु के नाम का बारहट हूँ ॥1 ॥

कवि पुनः कहता है – हे विष्णु, भगवान मैं तो आपके नाम का बारहट हुआ हूँ। आपके नाम का उपकार भिन्न-भिन्न है। इससे मेरा शरीर रत्न के समान सुन्दर हो गया। आँखों में दिव्य प्रकाश आ गया है। चाल घोड़े के समान तेज हो गई है और हूर (सुन्दर स्त्री) का वरदान मिला है ॥2 ॥

हे प्राणी, उत्तम करके इस शरीर को सिद्ध कर लो, सच बोलो और सच व्यवहार रखो। यदि सच्चा सुख प्राप्त करना है तो संतोष रखो और आये हुए महमानो के अच्छे वचन सुनो ॥3 ॥

हे प्राणी, इससे (विष्णु स्मरण) न कोई कलंक लगेगा, न बुढ़ापा आयेगा और न ही जन्म-मृत्यु होगी। कवि ताजदीन बारहट करते हैं – जहाँ अच्छे कर्म होते हैं, वहीं विष्णु भगवान निवास कहते हैं और वहीं बारहट कवि रहता है ॥4 ॥

गीता – 4

मनां फक मांगती येक लीजै,
कलालेक कुदड़े डीग मारे।
कुपाते कुदाय डंडिजै दोजकी,
गुन्हगार द्यै गुन्हगारे ॥1 ॥
दान दुड़ाय दीयै दान दयै दारीया,
दोजकी दान द्यै डीग मारां।
खोदाय नी दोसती खर खरचै नाहिं,
नापती दोकड़ो न्यौ सकारां ॥2 ॥
पर नंदया करै पैसे घरि पारके,
हत्या पंण्य पकड़ि लीये हाथे।
खुदाय नीं दरगै वाज्यस्यै पायचा,
तांह मानवियां तंणो माथे ॥3 ॥
निग्रब निगरूर निकुछ न होय निकाई,
न हेजे न्याय अधर में न दीठा।
आपरो झूठ वखाण सुण्य आदमी,
फुल्यजै तके फारीक फीटा ॥4 ॥
श्रवणो छंदो अजुगतो सुण्य आपणौ,
हय हय न करै क्रत त्यागै।
तांह तसकरां तंणै वाहै कवि तेजीयौ,
जू घंणा डंडिस्यै वजस जागै ॥5 ॥

भावार्थ – हे मन, तुम फालतू की ऊँची-ऊँची छलांग लगाते हो, कुकर्म करते हो। बुरे कर्म उस विष्णु को पसन्द नहीं, जिनके कारण तुझे नर्क का दण्ड मिलेगा। जो गुनाह करता है उसे उसकी सजा अवश्य मिलेगी ॥1 ॥

दान, कुकर्म में खर्च करता है, कुकर्मियों को दान देता है और उनके आगे अपने दान की बड़ाई करता है। हे मूर्ख, विष्णु भगवान से प्रेम नहीं करता है और न ही अच्छे कार्य करता है। ॥2 ॥

दूसरों की निन्दा करता है, दूसरों के घर बैठता है और जीवों की हत्या करता है। खुदा (विष्णु) के घर में उसके नाम लिये बिना तुझे कठिनाई होगी। हे मनुष्य, इन सबका पाप तेरे सिर पर ही होगा ॥3 ॥

हे प्राणी, तू बिना मान, अभिमान और कुछ नहीं (तुच्छ) होकर जी। इन अधर्म के कार्यों के फलस्वरूप तू न्याय की आशा न रख। तू स्वयं की झूठी बड़ाई की बातों को सुनकर प्रसन्न होता है। हे मनुष्य मुझे धिक्कार है ॥4 ॥

हे प्राणी, विष्णु को स्मरण करो और अपने अकर्म को याद रखो। किसी वस्तु के लिए हाय-तोबा न करो और अपने अकर्मणीय कार्यों को त्यागो। ऐसे कुकर्मियों को कवि तेजोजी सचेत करते हुए कहते हैं कि ऐसे लोग तो बहुत अधिक मार पड़ने पर ही जागेंगे ॥5 ॥

गीत – 5

सगे सारे पीहरे मंमसळे सीये सगे,
कुलखणे कुयते त्याग कीधौ।
तेण रोज मांन कोई नहीं तेजीया,
मांगस्य क कना विसंन प्रतीत्य न दीधौ ॥1 ॥
कान्य उंही तंणौ कूड़ सुंण्य अक्रमीयो,
वावरो जीज्यो गयो वाई।
लाज लुडेह नै काइहां अलाह नीं,
उहां ते वीनड़ि सी इलाही ॥2 ॥
माहरो माल मोहबतै विनां माहरी,
खरचीये इंण्य विना खून पाइस्यै।
कहै कवि तेजीयो जाब देस्यो किसुं,
त्रषै श्रब अन्याइय्या क्रेस इसो ॥3 ॥

भावार्थ – हे प्राणी, तुम्हारे अपने घर में, ननिहाल में, सासरे

में, सगे सम्बन्धियों में तुम्हारी मृत्यु के समय याद, तुम्हारे कर्म ठीक नहीं थे तो लोग कहेंगे कि उस कुलक्षणे-कुपते ने आज अपना शरीर छोड़ दिया। कवि तेजोजी कहते हैं कि उस समय तुम्हारा कोई मान नहीं होगा। यदि तुमने बुरे काम किये थे, यदि तुमने विष्णु का स्मरण नहीं किया है तो तुम किससे उनकी शरण में जाना मांगेंगे ॥1 ॥

हे प्राणी, उन सम्बन्धियों से तुम अपनी झूठी प्रशंसा सुनकर प्रसन्न हुआ। ऐसे लोगों को न कोई प्रभु से प्रीति है और न हीं उन्हें कोई शर्म है और न ही उन्हें इस इलाही (प्रभु की रचना) की कोई परवाह है ॥2 ॥

हे प्राणी, अपना यह शरीर (जीवन) प्रभु के प्रेम में खर्च करो। इसके न खर्च करने से तुम्हें हत्या का पाप लगेगा। कवि तेजोजी कहते हैं कि हे प्राणी, तू किसको जवाब देगा। यहाँ तो सब अन्यायी ऐसा ही करते हैं ॥3 ॥

गीत - 6

सुंण्य कान्य कलांम अलाह का इहजीस्य,
और महंमद का सुंण्य कलाम।
मंझय वचहुं तंणां कलमां नबी रसूल रा,
सुरति करि रीद सुध्य संभालीयै साम्य ॥1 ॥
कुफर सूं दोसती करिस नहीं कीजीयै,
जैंण्य इंमान क्यौं उपजै न्यान।
दुंनी महि दीन असलांम सूं दोसती,
अति घंणी करिज्यौ होय आसांन्य ॥2 ॥
अलाह का बंदा औलाद आदंग की,
उंमंते महंमंद की च्यारे इमांम।
आयतूं दीसू रकातूं सलातूं,
मजहब मांहि दीन सलांम ॥3 ॥
तयत अलाह की तूं करि तेजिया,
मुस्तफा मान्य महंमंद मान्य।
परहरे पुज मां पुजीय पाप छै,
भाषियो साहेब भूतखान्य ॥4 ॥

भावार्थ - हे प्राणी, तू अल्लाह (विष्णु) और महमद का नाम अपने कानों से सुन, वही अटल है। अपने मन, वचन से नबी रसूल की प्रार्थना कर। ऋद्धि-सिद्धि से सुरति करके श्याम (विष्णु) को याद कर। ये सब एक हैं ॥1 ॥

हे प्राण, बुरे कर्मों से मित्रता न कर, इससे ईमान नहीं रहता है और न ही ज्ञान होगा। इस संसार में प्रभु से प्रेम कर, जिससे तुम्हारे सब काम सिद्ध होंगे ॥2 ॥

हे प्राणी, तू विष्णु का पैदा किया है और उसकी संतान है। इस्लाम के चारों इमाम भी मंहमंद (विष्णु) के ही पैदा किये हुए हैं। कवि कहता हे - अल्लाह की आयत पढ़ना, दिशा बोध, रोजा रखना, सलाम करना, जीव न मारना आदि सब धर्माचार के ढंग हैं ॥3 ॥

हे प्राणी, तू अल्लाह (विष्णु) को याद कर। कवि तेजोजी कहते हैं - तू महमद को मान, मुस्तफा को मान, ये विष्णु का रूप है। अपने की धर्म में रहना श्रेष्ठकर है। मूर्तियों की पूजा करना छोड़ दे, यह पापकर्म है, ऐसा साहिब (विष्णु) ने कहा है ॥4 ॥

गीत - 7

असो एक दिन आखर तो तेरो आयसी,
वाट तई पसळाद वहिसी।
आपकी उंमति के कारण अलाह नुं,
क्रंम करि नबी मंहंमद कहिसी ॥1 ॥
छुटिसी उंतिम मंहंमद छुडायसी,
छाडिसी खुदाय करिसी सतारी।
अचोखा अमल होयसै अस खाइयां,
अमल चोखा दीसै इयारी ॥2 ॥
मुसतफा नबी मंहमद की उंमति,
उमत्य छुटिसी कवल आछ।
आयतुं हदीसुं रकातुं सलातुं,
श्रवणे सांमळो भाग्य साच ॥3 ॥
पांच सै वरस वळै दिन पंच पंथ पसळाद को,
तांतल्य दोरह तप तेजा।
ताह तस्कारां तल्य नारि नाखीज्यस्यै,
अलाह नबी ताज के भया न हेजा ॥4 ॥

भावार्थ - हे प्राणी, आखिर तो तेरा ऐसा एक दिन आयेगा, जब तू पहलाद पंथ (बिश्नोई धर्म) की राह पर चलेगा। आपकी (विष्णु) इच्छा के कारण अल्लाह, नबी, महमद (विष्णु) की राह में तू सतकम करेगा ॥1 ॥

जो सद्कर्म करेगा, वह छूटेगा। उन्हें महमद (विष्णु) छुड़ायेगा। जो सतकर्म करेगा, उसे खुदा छुड़ायेगा। प्रभु नाम स्मरण कर अमल (नशा) अच्छा है, इस स्मरण से इस जीव को मुक्ति मिलेगी ॥2 ॥

हे प्राणी, मुसतफा, नबी, महमद आद (विष्णु) की कृपा से बुरे कर्म छूटेंगे और अच्छे कर्म होंगे। आयत, हदीस, सलात आदि के स्मरण एवं आचरण से प्रभु को याद करो। विष्णु के स्मरण से ही तुम्हारा भाग्य सच होगा ॥3 ॥

- डॉ. कृष्ण लाल बिश्नोई
बी-111, समता नगर, बीकानेर-334004 (राज.)
मो.: 9460002309

क्रमशः आगामी अंक में...

भारतीय परंपरा का शाश्वत उत्सवः वसंत पंचमी

भारत उत्सवों का देश है, यहाँ उत्सव केवल सांस्कृतिक, धार्मिक महत्त्व ही नहीं रखते, अपितु प्राकृतिक तादात्म्य, राष्ट्रीय जागृति, स्वाभिमान रक्षा के मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता के परिचायक भी हैं। वसंत पंचमी केवल उत्सव का ही नहीं, बल्कि भक्ति, शक्ति और बलिदान का प्रतीक भी है। इसे 'श्री पंचमी', ऋषि पंचमी, मदनोत्सव, वागीश्वरी जयंती और 'सरस्वती पूजा उत्सव' भी कहा जाता है।

वसंत तो सारे विश्व में आता है पर भारत का वसंत कुछ विशेष है। गोकुल और बरसाने में फागुन का फाग, अयोध्या में गुलाल और अबीर के उमड़ते बादल, खेतों में दूर-दूर तक लहलहाते सरसों के पीले-पीले फूल, केसरिया पुष्पों से लदी टेसू की झाड़ियां, होली की उमंग भरी मस्ती, जवां दिलों को होले-होले गुदगुदाती फागुन की मस्त बयार, भारत और केवल भारत में ही बहती है।

माघ शुक्ल पंचमी को 'वसंत पंचमी' उत्सव मनाया जाता है। इसे 'श्री पंचमी', ऋषि पंचमी, मदनोत्सव, वागीश्वरी जयंती और 'सरस्वती पूजा उत्सव' भी कहा जाता है। इस दिन से वसंत ऋतु प्रारंभ होती है और होली उत्सव की शुरुआत होती है।

वसंत पंचमी के दिन ही होलिका दहन स्थान का पूजन किया जाता है और होली में जलाने के लिए लकड़ी और गोबर के कंडे आदि एकत्र करना शुरू करते हैं। इस दिन से होली तक 40 दिन फाग गायन यानी होली के गीत गाए जाते हैं। होली के इन गीतों में मादकता, एन्द्रिकता, मस्ती और उल्लास की पराकाष्ठा होती है और कभी-कभी तो समाज व पारिवारिक संबंधों की अनेक वर्जनाएं तक टूट जाती हैं।

भारत की छः ऋतुओं में वसंत ऋतु विशेष है। इसे ऋतुराज या मधुमास भी कहते हैं। 'वसंत पंचमी' प्रकृति के अद्‌भुत सौन्दर्य, श्रृंगार और संगीत की मनमोहक ऋतु यानी ऋतुराज के आगमन की सन्देश वाहक है। वसंत पंचमी के दिन से शरद ऋतु की विदाई के साथ पेड़-पौधों और प्राणियों में नवजीवन का संचार होने लगता है। प्रकृति नवयौवना की भांति श्रृंगार करके इठलाने लगती है। पेड़ों पर नई कोपलें, रंग-बिरंगे फूलों से भरी बागों की क्यारियों से निकलती भीनी सुगंध, पक्षियों के कलरव और पुष्पों पर भंवरों की गुंजार से वातावरण में मादकता छाने लगती है। कोयलें कूक-कूक के बावरी होने लगती हैं।

वसंत ऋतु में श्रृंगार रस की प्रधानता है और रति इसका स्थायी भाव है, इसीलिए वसंत के गीतों में छलकती है मादकता, यौवन की मस्ती और प्रेम का माधुर्य। भगवान् श्रीकृष्ण वसंत पंचमी उत्सव के आदि-देवता हैं। अतः ब्रज में यह उत्सव विशेष उल्लास और बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। सभी मंदिरों में उत्सव और भगवान् के विशेष श्रृंगार होते हैं।

वृन्दावन के श्री बांकेबिहारी और शाह जी के मंदिरों के वसंती कक्ष खुलते हैं। वसंती भोग लगाए जाते है और वसंत राग गाए जाते हैं महिलाएं और बच्चे वसंती पीले वस्त्र पहनते हैं। वैसे भारतीय इतिहास में वसंती चोला त्याग और शौर्य का भी प्रतीक माना जाता है जो राजपूती जौहर के अकल्पनीय बलिदानों की स्मृतियों को मानस पटल पर उकेर देता है।

मां सरस्वती का प्राकट्य दिवस

वसंत पंचमी ज्ञान, कला और संगीत की देवी मां सरस्वती का आविर्भाव दिवस है। सृष्टि के प्रारंभिक काल में ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की, पर वे अपनी सृजना से संतुष्ट नहीं थे क्योंकि चारों ओर मौन छाया था। विष्णु से अनुमति लेकर ब्रह्मा ने अपने कमण्डल से जल छिड़का, पृथ्वी पर जलकण बिखरते ही उसमें कंपन होने लगा। इसके बाद वृक्षों के बीच से एक अद्‌भुत शक्ति का प्राकट्य हुआ। यह प्राकट्य एक चतुर्भुजी सुंदर देवी का था, जिसके एक हाथ में वीणा थी तथा दूसरा हाथ वर मुद्रा में था। अन्य दोनों हाथों में पुस्तक एवं माला थी।

ब्रह्मा ने देवी से वीणा बजाने का अनुरोध किया। जैसे ही देवी ने वीणा का मधुरनाद किया, संसार के

समस्त जीव-जन्तुओं को वाणी प्राप्त हो गई। जलधारा में कोलाहल व्याप्त हो गया। पवन चलने से सरसराहट होने लगी, तब ब्रह्मा ने उस देवी को वाणी की देवी 'सरस्वती' कहा।

सरस्वती को बागीश्वरी, भगवती, शारदा, वीणावादनी और वाग्देवी सहित अनेक नामों से पूजा जाता है। ये विद्या और बुद्धि प्रदाता हैं। संगीत की उत्पत्ति करने के कारण ये संगीत की देवी भी हैं। ऋग्वेद में भगवती सरस्वती का वर्णन करते हुए कहा गया है-

प्रणो देवी सरस्वती वाजेभिर्वजिनीवती
धीनामणित्रयवतु।

अर्थात् ये परम चेतना हैं। सरस्वती के रूप में ये हमारी बुद्धि, प्रज्ञा तथा मनोवृत्तियों की संरक्षिका हैं।

हममें जो आचार और मेधा है उसका आधार भगवती सरस्वती ही है। इनकी समृद्धि और स्वरूप का वैभव अद्भुत है। वास्तव में सरस्वती का विस्तार ही वसंत है, उन्हीं का स्वरूप है वसंत। अत: वसन्त पंचमी को सरस्वती के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है और इस दिन ज्ञान, कला और संगीत की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती की पूजा की जाती है। यह दिन विद्या आरम्भ के लिए शुभ है। अत: हिन्दू रीति के अनुसार बच्चों को उनका पहला अक्षर लिखना सिखाया जाता है।

वसंत पंचमी हमें त्रेता युग से जोड़ती है। रावण द्वारा सीता के हरण के बाद श्रीराम उसकी खोज में दक्षिण की ओर बढ़े। इसमें जिन स्थानों पर वे गये, उनमें दंडकारण्य भी था। यहीं शबरी नामक भीलनी रहती थी जिसको उनके गुरु मतंग ऋषि ने वरदान दिया था कि किसी दिन भगवान खुद चल कर तेरी कुटिया पर आएंगे। जब श्रीराम उसकी कुटिया में पधारे, तो वह सुध-बुध खो बैठी और चख-चखकर मीठे बेर श्रीराम जी को खिलाने लगी। दंडकारण्य का वह क्षेत्र इन दिनों गुजरात और मध्य प्रदेश में फैला है। गुजरात के डांग जिले में वह स्थान है जहां शबरी मां का आश्रम था। वसंत पंचमी के दिन ही रामचंद्र जी वहां आये थे। उस क्षेत्र के वनवासी आज भी एक शिला को पूजते हैं, जिसके बारे में उनकी श्रद्धा है कि श्रीराम आकर यहीं बैठे थे। वहां शबरी माता का मंदिर भी है।

वसंत पंचमी का स्यालकोट निवासी वर्तमान पाकिस्तान में स्थित वीर हकीकत से भी गहरा संबंध है। एक दिन जब मौलवी जी किसी काम से विद्यालय छोड़कर चले गये, तो सब बच्चे खेलने लगे, पर वह पढ़ता रहा। जब अन्य बच्चों ने उसे छेड़ा, तो दुर्गा मां की सौगंध दी। मुस्लिम बालकों ने दुर्गा मां की हंसी उड़ाई। हकीकत ने कहा कि यदि में तुम्हारी बीबी फातिमा के बारे में कुछ कहूं, तो तुम्हें कैसा लगेगा? बस फिर क्या था, मौलवी के आते ही उन शरारती छात्रों ने शिकायत कर दी कि इसने बीबी फातिमा को गाली दी है। फिर तो बात बढ़ते हुए काजी तक जा पहुंची। मुस्लिम शासन में वही निर्णय हुआ, जिसकी अपेक्षा थी। आदेश हो गया कि या तो हकीकत मुसलमान बन जाये, अन्यथा उसे मृत्युदंड दिया जायेगा। हकीकत ने यह स्वीकार नहीं किया। परिणामत: उसे तलवार के घाट उतारने का फरमान जारी हो गया।

कहते हैं उसके भोले मुख को देखकर जल्लाद के हाथ से तलवार गिर गयी। हकीकत ने तलवार उसके हाथ में दी और कहा कि जब मैं बच्चा होकर अपने धर्म का पालन कर रहा हूं, तो तुम बड़े होकर अपने धर्म से क्यों विमुख हो रहे हो? इस पर जल्लाद ने दिल मजबूत कर तलवार चला दी, पर उस वीर का शीश धरती पर नहीं गिरा। वह आकाशमार्ग से सीधा स्वर्ग चला गया। यह घटना वसंत पंचमी (23 फरवरी, 1734) को ही हुई थी। पाकिस्तान यद्यपि मुस्लिम देश है, पर हकीकत के आकाशगामी शीश की याद में वहां वसंत पंचमी पर पतंगें उड़ाई जाती हैं।

वसंत पंचमी हमें गुरु रामसिंह कूका की भी याद दिलाती है। उनका जन्म 1816 ई. में वसंत पंचमी पर लुधियाना के भैणी ग्राम में हुआ था। कुछ समय वे रणजीत सिंह की सेना में रहे, फिर घर आकर खेतीबाड़ी में लग गये, पर आध्यात्मिक प्रवृत्ति होने के कारण इनके प्रवचन सुनने लोग आने लगे। धीरे-धीरे इनके शिष्यों का एक अलग पंथ ही बन गया, जो कूका पंथ कहलाया। गुरु रामसिंह गौरक्षा, स्वदेशी, नारी उद्धार, अंतरजातीय विवाह, सामूहिक विवाह आदि पर बहुत जोर देते थे। उन्होंने भी सर्वप्रथम अंग्रेजी शासन का बहिष्कार कर

अपनी स्वतंत्र डाक और प्रशासन व्यवस्था चलायी थी। प्रतिवर्ष मकर संक्रांति पर भैणी गांव में मेला लगता था। 1872 में मेले में आते समय उनके एक शिष्य को मुसलमानों ने घेर लिया। उन्होंने उसे पीटा और गौहत्या कर उसके मुंह में गौमांस ठूंस दिया। यह सुनकर गुरू रामसिंह के शिष्य भड़क गये। उन्होंने उस गांव पर हमला बोल दिया, पर दूसरी ओर से अंग्रेज सेना आ गयी। अत: युद्ध का पासा पलट गया। इस संघर्ष में अनेक कूका वीर शहीद हुए और 68 पकड़ लिये गये। इनमें से 50 को 17 जनवरी, 1872 को मालेरकोटला में तोप के सामने खड़ाकर उड़ा दिया गया। शेष 18 को अगले दिन फांसी दी गयी। दो दिन बाद गुरु रामसिंह को भी पकड़कर बर्मा की मांडले जेल में भेज दिया गया। 14 साल तक वहां कठोर अत्याचार सहकर 1885 ई. में उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया।

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय ने वर्ष 1996 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का शुभारम्भ भी वसंत पंचमी के दिन ही किया था।

हिन्दी साहित्य की अमर विभूति और कालजयी सरस्वती वन्दना 'वर दे, वीणावादिनि वर दे! य प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव, भारत में भर दे!' के रचियता महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्मदिवस (28.02.1899) भी वसंत पंचमी ही था।

भारत के शास्त्रीय संगीत के छ: रागों में एक राग है 'वसंत राग'।

अमृतसर के हरमंदिर साहिब में वसंत पंचमी के दिन से वसंत राग का गायन शुरू होता है जो वैसाखी के दिन (13 अप्रैल) तक चलता है। वैसाखी के दिन ही सिखों के दशम गुरु गोविन्द सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की थी।

भारतीय ज्योतिष में वसंत पंचमी को अत्यंत शुभ दिन माना गया है। गृह-प्रवेश या विवाह आदि मांगलिक कार्यों के लिए, नए उद्योग प्रारंभ करने और विद्या आरम्भ के लिए इसे अबूझ मंगलकारी दिन कहा गया है।

पौराणिक एवं ऐतिहासिक महत्व : इस पर्व के साथ अतीत की अनेक प्रेरक घटनाओं की भी याद आती है। त्रेता युग की घटना है। रावण द्वारा सीता के हरण के बाद श्रीराम उसकी खोज में दक्षिण की ओर बढ़ते हुए दंडकारण्य में शबरी नामक भीलनी के आश्रम पर वसंत पंचमी के दिन ही पहुंचे थे। गुजरात के डांग जिले में वह स्थान हैं जहां शबरी मां का आश्रम था। उस क्षेत्र के वनवासी आज भी एक शिला को पूजते हैं, जिसके बारे में उनकी श्रद्धा है कि श्रीराम आकर यहीं बैठे थे। वहां शबरी माता का मंदिर भी है।

वसंत पंचमी का दिन हमें वर्ष 1192 में पृथ्वीराज चौहान के बलिदान की भी याद दिलाता है। उन्होंने मोहम्मद गौरी को तराइन के युद्ध में पराजित किया और उदारता दिखाते हुए जीवित छोड़ दिया, पर जब दूसरी बार वे पराजित हुए, तो मोहम्मद गौरी ने उन्हें नहीं छोड़ा। वह उन्हें अपने साथ अफगानिस्तान ले गया और उनकी आंखें फोड़ दीं। गौरी ने मृत्युदंड देने से पूर्व उनके शब्दभेदी बाण का कमाल देखना चाहा। पृथ्वीराज के साथी कवि चंदबरदाई के परामर्श पर गौरी ने ऊंचे स्थान पर बैठकर तवे पर चोट करने का संकेत किया, तभी चंदबरदाई ने पृथ्वीराज को संकेत दिया।

चार बांस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण।
ता ऊपर सुल्तान है, मत चूको चौहान॥

पृथ्वीराज चौहान ने इस बार भूल नहीं की। उन्होंने तवे पर हुई चोट और चंदबरदाई के संकेत से अनुमान लगाकर जो बाण मारा, वह गौरी के सीने में जा धंसा। इसके बाद चंदबरदाई और पृथ्वीराज ने भी एक दूसरे के पेट में छुरा भोंककर आत्मबलिदान दे दिया।

इस दिन हमें मां भारती के दो अन्य महान सपूतों गुरु गोविन्द सिंह के शिष्य वीर बन्दा बैरागी और छत्रपति शिवाजी महाराज के सेनापति तन्हाजी मालसुरे को भी श्रद्धांजलि अर्पित करनी चाहिए जिनका बलिदान भी वसंत पंचमी को ही हुआ था।

सूफी वसंत: एक किंवदंती है कि 12वीं सदी के सूफी संत चिश्ती निजामुद्दीन औलिया अपने जवान भतीजे की मृत्यु से अत्यंत दुखी रहने लगे थे। मशहूर शायर अमीर खुसरो ने वसंत पंचमी के दिन कुछ औरतों को पीले कपड़े पहन कर पीले फूल ले जाते देखा तो खुद भी पीले

कपड़े पहन कर पीले फूल लेकर चिश्ती साहब के पास पहुँचे। उन्हें देख कर चिश्ती साहब के चेहरे पर हँसी आ गयी। तभी से दिल्ली में निजामुद्दीन औलिया की दरगाह और चिश्ती समूह की अन्य सभी दरगाहों पर वसंत मनाया जाने लगा।

भारत उत्सवों का देश है और यहाँ हर उत्सव अलग प्रकार का है। वसंत पंचमी उत्सव है वसंत ऋतु का, जिसके आते ही प्रकृति का कण-कण खिल उठता है। मानव तो क्या पशु-पक्षी तक उल्लास से भर जाते हैं। शिक्षाविद् इस दिन मां शारदे की पूजा कर उनसे और अधिक ज्ञानवान होने की प्रार्थना करते हैं, तो कलाकार, चाहें वे कवि हों या लेखक, गायक हों या वादक, नाटककार हों या नृत्यकार, वे सब इस दिन का प्रारम्भ अपने उपकरणों की पूजा और मां सरस्वती की वंदना से करते हैं। साहित्यकारों के लिए वसंत प्रकृति के सौन्दर्य और प्रणय के भावों की अभिव्यक्ति का अवसर है तो वीरों के लिए शौर्य के उत्कर्ष की प्रेरणा है।

ज्ञात हो कि मां शारदा का प्राचीनतम मंदिर पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में मुज्जफराबाद के निकट पवित्र कृष्ण-गंगा नदी के तट पर स्थित है। पौराणिक मान्यता है कि स्वयं ब्रह्मा जी ने इस मंदिर का निर्माण कर मां शारदा को वहां स्थापित किया था, इसीलिए उस मंदिर को ही मां शारदा का प्राकट्य स्थल माना जाता है। आद्य गुरु शंकराचार्य ने इसी शारदा पीठ में मां शारदा के दर्शन किए थे।

कश्मीर पर मां शारदा की ऐसी महती कृपा हुई कि शिवपुराण, कल्हण की राजतरंगणी, चरक-संहिता, पतंजलि का अष्टांग-योग और अभिनव गुप्त का नाट्यशास्त्र जैसे महान ग्रंथों की रचना कश्मीर में हुई। हमें सरस्वती का प्राकट्य दिवस, वसंत पंचमी और जीवन के महान संकल्पों के दिवस के रूप में मनाना चाहिए।

वसंत पंचमी केवल उत्सव का ही नहीं, बल्कि भक्ति, शक्ति और बलिदान का प्रतीक भी है। ऋतुराज बसंत, नाम लेते ही रोम-रोम पुलकित हो उठता है। मन को शीतल करतीं मंद-मंद हवा, गर्म रजाई-सी धूप, पेड़ों पर नई-नई कोपलें, फूलों पर बैठती तो कभी आसमान में दौड़ लगाती तितलियां, भंवरों का गुंजन और भी न जाने कैसे-कैसे दृश्य जो कामदेव की मादकता को भी नई ऊंचाइयां देते जान पड़ते हैं। मानो प्रकृति सब कुछ लुटा देने को व्याकुल हो, लेकिन बसंत में विस्मृति नहीं होनी चाहिए उन अंधेरियों की जो सब कुछ उड़ा देने को व्याकुल थीं, उस चिलचिलाती धूप की जिसने चराचर जगत को झुलसने को मजबूर किया, उन घमंडी बिजलियों की जिसने समय-समय पर वज्राघात कर इसी धरती के सीने को छलनी किया, कफन की बर्फीली चादर की जिसने कभी शिराओं के रक्त को भी जमा दिया था। आज राष्ट्रजीवन में जब हम बसंत का अनुभव कर रहे हैं तो उन आत्माओं का स्मरण करना भी बनता है जिन्होंने इतिहास की षट ऋतुओं के आघात को सहा।

बसंत पंचमी केवल उत्सव का ही नहीं बल्कि भक्ति, शक्ति और बलिदान का प्रतीक भी है जिनको शायद हमने भुला सा दिया लगता है। इसी दिन माता शबरी ने अपने भगवान श्रीराम के अमृत तुल्य जूठे बेरों का रसास्वाद किया तो पृथ्वीराज चौहान व वीर हकीकत राय ने जीवन का बलिदान दे कर आज के राष्ट्रजीवन में बसंत की नींव रखी। सद्गुरु राम सिंह जी का जन्म भी इसी दिन हुआ, जिन्होंने गौरक्षा के लिए बलिदान की परंपरा को नई ऊंचाई दी।

इस पर्व का संदेश है कि हर बसंत कठोर संघर्ष, बलिदान, भक्ति के मार्ग से होकर निकलता है। बसंत के पीले चावल खाने का अधिकार उन्हें ही है जो देश व समाज के लिए विषपान करना जानता हो। बसंत की शीतलता पर पहला अधिकार गुरु तेगबहादुर व उनके शिष्यों जैसी महानात्माओं को है जो धर्म की रक्षा के लिए कड़ाहे में उबलना और रुई में लिपट कर जलने की कला में पारंगत हैं। हमारे राष्ट्रजीवन में आया बसंत कभी वापिस न हो इसके लिए हमें हर परिस्थितियों का मुकाबला करने, हर तरह के बलिदान करने को तत्पर रहना होगा। यही इस बसंत का संदेश है।

-डॉ. राजा राम
गांव शेखूपुर दड़ौली, फतेहाबाद
मो.: 9896789100

"Indian Culture and Relevance of Environmental Thought of Bhakti Saint Guru Jambhoji"

Man is an intellectual creature and his life is often purposeful. Animals operate instinctively whereas man walks with the help of his intelligence. With this intelligence man acquires rational knowledge, with the help of this knowledge the knowledge of human values becomes clear. What is the world of knowledge, and what is man? What are human life values? What is true? What else is false? What are merits and demerits? What is the basis of morality and immorality? What are the sources of life values? How should a man lead a life based on values? Answers to such innumerable questions can be found in the universal, literary and philosophical thoughts of the major thinkers of world history. The life journey of a human being which started with instincts first moved towards social instincts, the person himself did rituals, as soon as the society gave approval to this continuous process of resources and rituals, the era of social rituals and change started from here itself, this is where the differentiation of human journey of culture begins. In order to live life, man understood the utility, livelihood, self-defense and desirability of multiple resources from the mental, spiritual, physical and social point of view, or it can be said that when man made an ideal-oriented use of understanding, then the human values were born.

The collective acceptance of human values started shaping life values from the point of view of '**सर्वजन हिताय**'and from here the process of building life values started in the journey of development of human life. Both creation and destruction had a role in their determination. The way western rationalists have interpreted the concept of value from the perspective of conscience, the same approach has been followed in Indian rationalism as well. The great poet Kalidas confirms this in the play Abhijnanasakuntalam:-

"सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तः करणप्रवृत्तयः।"

In the long-term development journey of world humanity, many thinkers have not only continuously guided humanity with their thinking according to the country, time and situation, but some philosophers, sages, saints and good men have given a new direction to human civilization with their excellent philosophy of life. In particular, it can be said with confidence that the residents of the land of India had as much understanding about the value of life in the Rigvedic period, as much as Europe did not even knew anything related to it. Vedic evidence and references are still referred to international values. The ideal-oriented biography of human life, which started in India thousands of years ago, has created so much in its journey of development to make life meaningful and valuable that it is not available for study anywhere else. In the barbaric era, when the era depended only on scriptures and weapons, then only India, not only used democratic life values like '**सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय**' but also established them in principle. Some examples are visible:-

(**त्वां विशो वृणतां राज्याय,** You are chosen by the people to rule the kingdom), (विशि राजा प्रतिष्ठित– The royal power of the king resides in the subjects) '**विशस्त्वा सर्वा वांछन्तु मा त्वद्राष्ट्रमधिभ्रशन्** –O King, be friendly to all your subjects, so that all the subjects are desirous of you.

The understanding of the democratic values of the present world by the Indian man thousands of years before Christ, is still a matter of concern in the politics of the world. Indian intelligence had interviewed the valuable aspects of life since ancient times and its upliftment-oriented conscience was always striving towards its continuous development. From the point of view of the ruler and the ruled, how familiar was the life of the Aryans with the values of life? It can be inferred from the saying

of Yajurveda that:- हे मातृभूमि ! तू मेरी हिंसा मत कर, मैं तेरी भी हिंसा न करूँ। It is a matter of great pleasure that not only the ruler, but also the governed were not only enlightened by the realization of the 'value of life', but were conscious of it. The Yajurvedic sage while addressing the king says that 'हे प्रस्तावित राजन्! हम कृषि के विकास के लिए (कृष्यै), धन, ऐश्वर्य के लिए (राये) सार्वजनिक कल्याण के लिए (क्षेमाय) और सार्वजनिक पोषण के लिए राज्य पद पर तेरा अभिषेक करते हैं।' Before dethroning the ruler, he was made aware of the purpose that 'he will bear the heavy weight of the welfare of the subjects on his shoulders'. At many places in the Atharvaveda, there are many references to the people deposing the irresponsible king, re-establishing him, and electing a new king. The modern governance system which has been adopted by man after many values, which has been accepted by the whole world as an ideal governance system. Its quality was appreciated in the Vedic period. Its expansion and rituals continued to exert its pressure till the Janpada era. Being an Indian, it gives me great pleasure to mention that the practice of parliamentary form of government, prevalent in two-thirds of the world's countries, was already prevalent in India by the time of the Atharvaveda.

In the initial primitive stage of human development journey, this earth was of pure environment and rich in resources. The entire environment of the universe was balanced. Man's relationship with nature was motherly. That is, man grew up in the cradle of nature. As soon as the blind race of human development started, then man running on the stairs of physical glare, marketism, industrialization, technocracy, modernization started destroying the environment. As a result, a huge problem of environmental pollution has arisen. Destruction of forests has started, decreasing forests, rising global temperature, melting glaciers, decreasing ground water level, climate change, increasing pollution of soil, water, air and sound, rivers drying up, sea level rising, ozone getting depleted. Layer, along with the problems of hunger and housing spreading from the ever-increasing population, as well as the ever-changing epidemics, the ecological imbalance arising from the increasing hunting and killing of animals, presented direct challenges to the human beings in the 21st century. Today the situation has become so dire that along with falling human values, adverse communal atmosphere, a serious crisis has arisen for the protection of the environment. By the way, in the Indian tradition, religion also represents values. In the Indian tradition, where the Vedic ashram system is totally based on nature, nature itself stands by the family norms every moment. Here are some examples:-

प्राणमाहुर्मातरिश्वानं वातो ह प्राण उच्यते।

प्राणो ह भूतं भव्यं च प्राणे सर्व प्रतिष्ठितम्। **अथर्ववेद 11.4.15**

वात आ वातु भेषजं शम्भु मयोभु नो हृदे। प्रण आयूंषि तारिषत्।

ऋग्वेद10.186.1

औषधीरिति, मातरस्तद्वो देवीरुपब्रुवे। **यजुर्वेद 12.78**

आप इद् वा उ भेषजीरापो अमीवचातनी:।

आप: सर्वस्य भषजीस्ता ते कृण्वन्तु भेषजम्॥ **ऋग्वेद 10.137.6**

इमे लोका अप्सु प्रतिष्ठिता:॥ **तैत्तीरीय आरण्यक 1.22.8**

इयं पृथ्वी सर्वेशां भूतानां मध्वस्यै पृथिव्यै सर्वाणि भूतानि मधु।

वृहदारण्यकोपनिषद् 2.5

उद्यानदेवतालयपितृवनवल्मीकमार्गचितिजाता:।

कुब्जोर्ध्वशुष्ककण्टकिवल्लीवन्दाकयुक्ताश्च॥

बहुविहगालय कोटरपवनानलपीडिताश्चये तरव:।

ये च स्यु: स्त्रीसंज्ञा न ते शुभा: शक्रकेत्वर्थे॥ **वृहत्संहिता 58.3-4**

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभव:।

यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञ: कर्मसमुद्भव:॥ **श्रीमद् भगवद् गीता अध्याय (3)**

The whole life of Maryada Purushottam Lord Rama becomes fruitless after having the 14 years of exile which is nothing separate from nature. On the other hand, Yogeshwar Krishna himself expresses his words through natural elements even in wartime situation, he himself says in Shrimadbhagwadgita:-

आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंश्रुमान्।

मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी॥21॥ **श्रीमद् भगवद् गीता अध्याय 10**

रुद्राणां शंकर: च अस्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम्।

वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम् ॥23 ॥ **श्रीमद् भगवद् गीता अध्याय 10**

पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम् ।

सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः ॥24 ॥ **श्रीमद् भगवद् गीता अध्याय 10**

महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम् ।

यज्ञानां जपयज्ञोअस्मिस्थावराणां हिमालयः ॥25 ॥ **श्रीमद् भगवद् गीता अध्याय 10**

अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः ।

गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः ॥26 ॥ **श्रीमद् भगवद् गीता अध्याय 10**

उच्चैः श्रवसम्अश्वानाम् विद्धि माममृतोउदभवम् ।

ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम् ॥ 27 ॥ **श्रीमद् भगवद् गीता अध्याय 10**

Similarly, all the projects of Lord Buddha's modesty and austerity are related to nature, then Mahavira's non-violence strongly opposes the killing of animals. Not only this, before Shankaracharya, the Brahmin religion reform program started with the protest against animal sacrifice is seen again in the medieval period as Bhakti Andolan. Countless saints like Nanak, Kabir, Mahatmas and Sufis include the values of nature protection in their thoughts.

Guru Jambheshwar's name is taken as a supernatural visionary in the series of Bhakti saints. Five hundred years ago, Guru Jambheshwar presented such a simple code of conduct of human values for the welfare of the whole world, which has become a milestone for environmental protection on the whole earth along with causal and non-causal conceptual thinking. Guru ji's disciple tradition and followers not only followed this code of conduct but presented exemplary examples of sacrifice for the protection of human values like environmental protection. Although the relevance of all these Jambhani ideals is timeless, but following the environmental values has become a great need of the contemporary era. Jambhoji preached through his Sabdavani and by calling people to protect nature, the hypocrisy of the time, where communalism and social evils were opposed, the message of life protection was given in favor of non-violence. He gave a syncretic message of knowledge, action and Bhakti just like the Gita. His words **"रुंख लीलो नहीं घावै"** became an exemplary role model for his followers and environment loving good men. Amrita Devi raised this proclamation in Khejarli Khadana 1730 into **"सिर साटे रुँख रहे तो भी सस्तो जाण"** Guru Jambheshwar's environmental thinkings are visible in examples:-

अहिंसा के पक्षधर, जीव हत्या के विरोधी :

जीव दया पालणी... ॥ **(विश्नोई धर्म नियम 29)**

ओ३म् सुणरे काजी सुण रे मुल्ला सुण रे बकर कसाई ।

किण री थरपी छाली रोसो, किण री गाडर गाई ।

सूल-चुभीजै करक दुहेली, तो है है जायो जीव न घाई ।

थे तुरकी छुरकी भिस्ती दावो, खायजा खाब अखाजूं ॥ **(सबद 8)**

चर फिर आवे सहज दुहावे तिसका खीर हलाली ।

जिसके गले करद क्यूं सारो, थे पढ़ सुण रहिया खाली ॥ **(सबद 11)**

भाई नाऊ बलद पियारो, ताके गले करद क्यूं सारो ।

जीवां ऊपर जोर करीजै, अंतकाल होयसी भारूं ।

काहे काजे गऊ विणासो, तो करीम गऊ क्यूं चारी ॥ **(सबद 9)**

गऊ विणासो कांहे तानी, राम रजा क्यूं दीन्ही दानी

कान्ह चराई रनबे बानी, निरगुण रूप हमें पतियानी ॥ **(सबद 94)**

रूंख लीलो नहीं घावे, ॥ **(विश्नोई धर्म नियम 29)**

सिर साटे रूंख रहे तो भी सस्ता जांण ॥

(अमृतादेवी, खेजड़ली खड़ाणे के समय) ॥

सो पति बिरखां सींच पाणी, जिहिंका मीठा मूल समूलूं ।

सोम अमावस आदित वारी, कांय काटी वन रायों ॥ **(सबद 7)**

हरि कंकहड़ी मंडप मैड़ी, जहां हमारा वासा ॥ **(सबद 73)**

मोरे धरती ध्यान वनस्पति वासों ।

ओजूं मंडल छायों ॥ **(सबद 29)**

भल मूल सींचो रे प्राणी, जूं तरवर मेलत डालूं ॥ **(सबद 31)**

करसण करो सनेही खेती, तिसिया साख निपाइये ॥ **(सबद 30)**

ओ३म् अकल रूप मनसा उपराजी ।

तामां पांच तत्व हो राजी ।

आकाश, वायु, तेज ,जल धरणी ।

ता मां सकल सृष्टि की करणी ॥ **(कलश मंत्र)**

देव रहे नित वन के मांही, लीली लकड़ी तोड़ै नाहीं **(जम्भसागर, भाग प्रथम, पृ.सं 103, द्वितीय संस्करण,**

संपादक स्वामी कृष्णानंद आचार्य, प्रकाशक, स्वामी आत्मप्रकाश)

रूंख राय म्हे काटा नाहीं **(जम्भसागर, भाग-2, पृ.सं 241, द्वितीय संस्करण, संपादक : स्वामी कृष्णानंद आचार्य, प्रकाशक: स्वामी आत्मप्रकाश)**

लीलै रूख न घालों घायां॥ **(वही, भाग प्रथम, पृ.सं 98)**

जांडी और ग्वाल जब जावै, पेड़ पेड़ परमेश्वर पावै॥ **(वही, भाग प्रथम, पृ.सं 73)**

रूख हमारे मात पित, तुम्हरै काहा जु वैर॥ **(वही, भाग-2, पृ. सं 241)**

..... ता ही पेड़ में इमरत धारा॥ **(वही भाग प्रथम पृ.सं 156)**

जाड़, खेजड़ी और कंकेड़ा ..... जाल .....रोहिड़ा किंकरू।
बड़ अरू पीपल, नींमरूंढाका, इह काटै ते पापी पाका॥
(वही, भाग प्रथम, पृ.सं 268)

कोटड रूंख बहुत अघलागै, जीवजंत ते दूर ही भागै।
जैसी पीड़ आपणै होई, तैसीहिं पीड़ गिणै सब कोई॥
(वही, भाग प्रथम, पृ.सं 268)

दिया खेजड़ी साठे सीसा, किता खड़या जाणै जगदीसा।
तज्या मण तन राख्यां मान, सिर सूंप्या साखा जिम जांन।
दियासीस ते चड्या परवाण, खड़िया ते चड़िया विमांण।
तीन सौ तिरेसठ ता ऊपर, सांचो धर्मरहलो भू पर॥
(वही, भाग-2, पृ.सं 257)

वृक्ष आदि स्थावर सब सृष्टि, ब्रहारूप यह जान समष्टि॥
(वील्होजी की वाणी)

पीछे जोड़े जीव दया नितराख पाप नहीं कीजियें।
जांडी हिरण संहार देख, सिर दीजियै॥ **(वील्होजी की वाणी)**

दयाहीन काटी वनराय, जीव असष दह्या दुहलाय।
देख जीव विरष की छांट, जीव जाणै सरणागति जांह।
फफा फलीजे रूंखड़ा, नित सींचिये सुनीर।
विश्नोइयां धरम जोय, शाख पर भजे काया।
देवजी आप फिरे वन मांहि, नीली सुखी तोड़े नाहीं।
करमणि खड़ी छै खेजड़िया काजि, रैवासा के चौहटे।
(संत वील्होजी की वाणी, विक्रम संवत् 1589-1673)

काटै वनी बहुप्रीतो, हिंस्याजीव की करतो।
(पोथो ग्रंथ ज्ञान, ग्रंथ चेतावणी-उदोजी रचित, पृं.सं. 20, संपादक: आचार्यकृष्णानंद, प्रकाशन-जांभाणी साहित्य अकादमी, संस्करण 2013)

लीलो रूंख कदे नी काटै, सिर लेवा रूंखा के साटे॥
(साहबरामकृत जम्भसागर से उद्धृत 1908 से 1924)

तरवर सरवर संतजन चौथा वरसे मेह।
परमारथ रे कारणे, चारों धारी देह॥ (**परमानंद जी वणियाल कृत, संपादक-आचार्य कृष्णानंद)**

कटै रूंख प्रतपाल खेजड़ा रखत रखावै।
(हजूरी कवि उदोजी कृत, पोथों ग्रंथ ज्ञान, संपादक आचार्य कृष्णानंद)

In this way, by following his environmental values, not only 363 men and women in Khejarli, Jodhpur sacrificed their lives for the protection of trees, but for the protection of nature and living beings. The followers and disciples of Guru Jambheshwar are doing their best even today at the cost of continuous environmental protection. They are ready to sacrifice their everything happily. At present, global and national level efforts are being made to protect the environmental values, but a loyalty that every man should have to protect his mother nature has not yet arisen.

These human welfare values of Indian culture can prove to be a boon for the world humanity. It is eternal and universally visible. It would not be an exaggeration to say that the environmental values of Indian culture are as relevant even today as they were in the time of their creation, but we should try to propagate and spread these values at the world level immediately. The speed of propagation is slow. By establishing the prestige of these values at the world level, not only will the nature of the relevant importance of our culture be clear, but the distraction of world humanity towards environmental protection will end. Instead of paper schemes and formalities, we have to try to return to following these solid and authentic values of ours so that we all together can protect the world civilization through our immortal culture. To protect and preserve the natural rights of our future generations. It is hoped that the Dubai International Environment Conference will be able to clarify the relevant importance of the environmental values given by Guru Jambheshwar by establishing them everywhere in the contemporary world.

- Dr. Bhanwar Lal (Umarlai)
Research Fellow, Department of History
JNVU Jodhpur
Mob.: 9587653744

बधाई संदेश

जितेन्द्र सुपुत्र श्री राजकुमार गोदारा, निवासी गांव मोठसरा, जिला हिसार का चयन भारतीय सेना में अग्निवीर योजना के अन्तर्गत पैराकमाण्डो के पद पर हुआ है।

आदित्य प्रताप सुपुत्र डॉ. सुरेन्द्र सिंह खिचड़ (SMO, Distt Civil, Hisar), निवासी हिसार का MS Orthopedics, JLN Medical College, कर्नाटक में प्रवेश प्राप्त हुआ है।

बबलू सुपुत्र श्री राजू जी पाडियाल, निवासी गांव खातेगांव, जिला देवास (म.प्र.) की सम्पूर्ण इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिन्ट मीडिया पत्रकार संघ द्वारा खातेगांव जिला देवास में अध्यक्ष के पद पर नियुक्ति हुई है।

केशव सुपुत्र श्री रामसुख गिला, निवासी नीमगांव, नॉर्थईस्टर्न यूनिवर्सिटी, टोरंटो कनाडा से डेटा एनालिटिक्स की परीक्षा प्रथम सेमेस्टर में 90 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की है।

किरण सुपुत्री श्री कुलदीप गोदारा, निवासी गांव रावतखेड़ा, जिला हिसार ने 21 से 23 दिसम्बर, 2022 महिला राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता, विशाखपटनम में आयोजित 76 किलो भार वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

मुदिता सुपुत्री श्री सोरभ कुमार बिश्नोई गोयल, निवासी गांव धामपुर, जिला बिजनौर (उ.प्र.) ने जांभाणी साहित्य संस्कार परीक्षा में बाल वर्ग (ग्रुप-A) में प्रदेश में प्रथम एवं राष्ट्रीय स्तर पर 5वां स्थान प्राप्त किया है।

तरूण सुपुत्र श्री नरेश बैनीवाल, निवासी गांव बुर्ज भंगु, जिला हिसार ने चार्टर्ड एकाउंटेंट्स (CA) की परीक्षा उत्तीर्ण की है।

वर्षा सुपुत्री श्री बलदेव सिंह लोहमरोड़ (प्रधान बिश्नोई सभा टोहाना) निवासी गांव बुवान, जिला फतेहाबाद की नियुक्ति Mac Donald, Finland में प्रथम अंतर्राष्ट्रीय शिफ्ट मैनेजर के पद पर हुई है।

मोहित सुपुत्र श्री महादेव खिलेरी, निवासी गांव पिरथला, जिला फतेहाबाद, हरियाणा ने चार्टर्ड एकाउंटेंट्स (CA) की परीक्षा उत्तीर्ण की है।

प्रिया सुपुत्री श्री राजेन्द्र डूडी, निवासी गांव असरावां, तह. आदमपुर, जिला हिसार ने भोपाल में आयोजित 65वीं 10 मीटर एयर पिस्टल नेशनल शूटिंग प्रतियोगिता में नेशनल क्वालीफाई किया व भारतीय टीम के ट्रायल के लिए चयन हुआ है।

श्री तेलू राम सहारण सुपुत्र स्व. श्री रामस्वरूप सहारण, निवासी गांव कालीरावण हाल निवास मंडी आदमपुर, जिला हिसार को 26 जनवरी 2023 को गणतंत्र दिवस पर, हरियाणा बिजली निगम के विजिलेंस विभाग के राज्यस्तरीय कार्यक्रम में वर्ष 2022 के दौरान राज्य क्रिमिनल इन्वेस्टिगेशन में बेस्ट ऑफ फर्स्ट पोजीशन तथा केस डिस्पोजल में हरियाणा में प्रथम स्थान पर होने पर प्रशंसा पत्र व 10000 रुपये का नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

आप सबकी इन उल्लेखनीय उपलब्धियों पर बिश्नोई सभा, हिसार व अमर ज्योति पत्रिका परिवार की ओर से हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

कवि देवोजी व रावल जैतसी कृत हरजस

(राग विळावळ)

सतगुर आयौ रळीये-रळीये, कुंण नेम व्रत कियौ आं थळीये॥1॥टेक॥
हिरणाकस मारि पहळाद उबारे, अपणौ भगतां का कारज सारे॥2॥
रावण मारि बभीछण थापे, सोई गुर आयौ आपो आपे॥3॥
नीबे नारेळ आके आंब, तुम विण कुंण करै गुर झांभ॥4॥
देवो कहै देव मैं अबकै पाए, और जळम फिरि वाद गुमाए॥5॥

भावार्थ- सतगुरु श्री जाम्भोजी महाराज सहजे-सहजे आये हैं और उन्होंने इस मरूस्थल में नेम व्रत बताया है। जिन्होंने हिरणाकश्यप को मारकर प्रह्लाद को बचाया था और अपने भक्तों के कार्य सिद्ध किये थे। जिन्होंने रावण को मारकर विभीषण को राजा स्थापित किया था, वही सतगुरु श्री जाम्भोजी महाराज अपने आप आए हैं। नीम के नारियल और आक के आम (राव बीदा को परचा) उस सच्चे सतगुरु जाम्भोजी के बिना कौन कर सकता है? कवि देवोजी कहते हैं- मैंने देव को इस बार ही पाया है, इससे पहले मैंने अपने जन्म व्यर्थ ही गवाएं हैं।

(राग सोरठ)

विडद किसा दे गाऊं,
इण अवतार प्रवाड़ा कीन्हा, पहला पार न पाऊ॥1॥टेक
इसकंदर कूं आणि जगायौ, करहा की असवारी।
हासम-कासम दरजी रोक्या, फिट काफर मुरदारी॥2॥
सतगुरु का एक सिष्य सियाणां, महमद सूं फुरमाई।
सति परणाम कह्या गुरु मेरे, मरती गऊ छुड़ाई॥3॥
सांतळि सीख सुणी सतगुर की, ऊंच पदवी मनमानी।
नरपत नहचै सूं निसतरियौ, हुयग्यौ सील सनानी॥4॥
सांगै राणै सतगुर औळखियौ, चित चोखे चीतौड़ी।
झाली राणी जगत पिछाणी, तन की तिरसनां तोड़ो॥5॥
जैसलमेर जगत सोह जाणै, रावळ नै परचायौ।
काचो कळस कियौ महमांणी, सतगुरु सरणै आयौ॥6॥

भावार्थ- हे जाम्भोजी महाराज, आपके किन-किन गुणों को मैं गाऊं, इस अवतार में आपने जो प्रवाडै (परचा) किये हैं, उनका कोई पार नहीं पा सकता है। बादशाह सिकन्दर लोदी को श्री जाम्भोजी ने सोये हुए को जगाया था और आप उसके महलों में रात्रि को ऊंट सहित गये थे। हे सिकन्दर बादशाह, तुम्हें धिक्कार है, तुमने हासम-कासम दर्जी को क्यों रोका है? सतगुरु का एक शिष्य मुसलमान था, उसे सत् का परिणाम बताया और मारने वालों से गायों को छुड़ाया। राव सांतल ने सतगुरु जाम्भोजी की शिक्षा सुनी तो उसने ऊंची पदवी मानी, वह राजा निश्चय से सील-सीनानी (बिश्नोई पंथ अपनाकर) होकर इस भवसागर से पार हो गया था। चित्तौड़ के सांणा राणा ने सच्चे मन से सतगुरु को पहचाना, उनकी माता झाली रानी ने भी गुरुजी को पहचान लिया था, आपने उसके तन की तृष्णा को समाप्त कर दिया था। सब संसार यह जानता है कि जैसलमेर के रावळ जैतसी को जाम्भोजी ने परचा दिया था, उन्होंने कच्चे घड़े में पानी ठहराया था, तब वह सतगुरु के शरण में आ गया था।

साभार- बिश्नोई संतों के हरजस

मजबूर नहीं, मजबूत बनो

पैदा हुआ एक द्वंद
इसी पर किया
जब मनन तो,
इस पर क्या बोलू ?
क्या लिखूं ?
क्यों न कहूँ ?
'रामा' न जाने ये
कैसी मजबूरी है ?
आज कथनी करणी,
यथार्थ में बड़ी दूरी है।
कहना कुछ और है,
करना कुछ और,
यही चहुँ और फैला
यही आज का दौर है,
यही आज का दौर है॥
न जाने ये कैसी मजबूरी ?
हाय, न जाने क्यों
इन्सान हुआ आज
इतना कमजोर है।
इसी बात का तो रोना है
इंसानियत आजकल
कहीं खोने को है।
चहुँ ओर छल है
छलावा, प्यार, स्नेह तो मात्र
इक दिखावा है।
माना इंसां मजबूर है
अपने कर्मों से,
पर ये कर्मों का नहीं
आदमी का ही कसूर है।
मजबूरी ही हाय ये
कैसी आन पड़ी ?
सत् वचन कोई न बोले,
अपनी मीठी-मीठी वाणी
में केवल और केवल
स्वार्थ ही घोले।
आज इंसा हुआ मन का गुलाम
यही है मजबूरी यही उसका काम।
ईश्वर भी उसमें क्या करे ?
जब बस में नहीं है
इंसान का अपना मन।
अपने मन को तुम साध लो
मानव
वर्ना ये तुम्हें बहुत भटकायेगा
जंगी कर देगा
पंख तुम्हारे,
तू कभी फिर
उड़ नहीं पायेगा,
उड़ नहीं पायेगा।
जीवन का ध्येय तुम्हारा
सब मिट्टी मिट्टी हो कर
मिट्टी में मिल जायेगा।
ख्वाब तुम्हारे सारे
जो थे आसमान
छूने के तिनके से ताज का
सफर के वो केवल
केवल ख्वाब रह जायेंगे।
मन से मजबूर न बनो
कर्म से मजबूत बनो
इंसानियत जिंदा रखो
किसी की मजबूरी पर मत हंसो।
जिंदगी के इस
सफर में सबके साथ रहो,
साथ दो
किसी की मजबूरी न बनो,
किसी को मजबूर न करो,
जिन्दगी को जिंदादिली से जियो,
सबसे मिलजुल कर रहो,
सबके संग संग रहो।
मजबूर नहीं,
मन से, कर्म से, वचन से,
मजबूत बनो, मजबूत बनो॥

-सुशील पूनियां
रामा कुंज, 8/368, आर.एच.बी. कॉलोनी,
हनुमानगढ़ जंक्शन-335512

परमार्थ की खोज करो ऐ प्राणी!

वह भक्त का भगवान से मिलना नितांत पवित्र था,
प्रत्यक्ष ईश्वर-जीवन का, संगम अतीव विचित्र था।[1]

मनुष्य का सारा जीवन एक खोज में ही गुजर रहा है। वो क्या चाहता है? क्या उसे पता है वह मनुष्य अपना सारा जीवन इस संसार में दौड़ते-भागते व्यर्थ ही गवां देता है। क्या हम असल में वो खोज लेते हैं जिसे हम पाना चाहते हैं? मनुष्य की खोज व इच्छाएँ कभी पूर्ण नहीं होती। जो लोग बहिर्मुखी हैं वो बाहरी वस्तुएं - धन, दौलत, सुख, संपदा की खोज में लगे रहते हैं। लेकिन जो लोग अर्न्तमुखी होते हैं वो परमार्थ की खोज कर प्रभु की भक्ति द्वारा अपने अर्न्तमन के मैल को साफ करके प्रभु की शरण में जाकर अपने आवागमन के बन्धुओं से मुक्त होने का प्रयत्न करते हैं। जो प्रयत्न करते हैं, वो सफल भी होते हैं। प्रभु उन भक्तों को अपनी शरण में ले ही लेते हैं जो परोपकारी होते हैं जो परमार्थ में मग्न होते हैं। जीवन की इस भागदौड़ में हम बहुत कुछ सीखते भी हैं और भूलते भी हैं। अभिमान कहता है कि किसी की जरूरत नहीं और अनुभव कहता है कि किसी की जरूरत नहीं और अनुभव कहता है कि धूल भी उपयोगी होती है। हम अपने जीवन में अच्छे व बुरे सब कर्म करते हैं। लेकिन देखिये (कर्म) के पास न कागज है, न किताब है, फिर भी सारे जगत् का हिसाब है। ईश्वर की बनाई यह सृष्टि बेशकीमती खजाने से भरी हुई है। प्रतिवर्ष इस दुनिया में अरबों व्यक्तियों का आवगमन होता है। किन्तु यहाँ से (यानि) इस संसार से जाते हुए कोई भी एक तीली तक साथ नहीं ले जा सकता। सब कुछ यहीं धरा का धरा रह जाता है और साथ क्या जाता है? केवल और केवल उसके द्वारा किये हुए कर्म। इसलिए ऐसे कर्म कीजिये जिससे आप अपना जीवन सुधार सकें व औरों का जीवन भी संवार सकें। परोपकारी बनो! परमार्थ खोजो। परोपकार व परमार्थ करना तो बहुत बड़ा धर्म, कर्त्तव्य है। परमार्थ एक ऐसी अवस्था है, जहां कोई खोज नहीं रह जाती, मन स्थिरता से परमार्थ भर जाता है। मनुष्य की इसी मानसिक अवस्था को परमार्थ कहा जाता है। जब मन ही तृप्त हो जाता है तो उसके बाद सारी इच्छाएँ अपने आप ही पूर्ण हो जाती हैं।

कबीरदास जी कहते हैं कि -

मन पंघी तब लग उड़ै, विषय वासना महिं।
ज्ञान बाज के झपट में, तब लागे आंवै नाहिं॥[2]

कहा है कि यह मन रूपी पक्षी विषय-वासनाओं में तभी तक उड़ता है, जब तक ज्ञान रूपी बाज के चंगुल में नहीं आता। अर्थात् ज्ञान प्राप्त हो जाने पर मन विषयों की तरफ नहीं भागता। अब यहाँ कोई खोज शेष नहीं रह जाती, ना तो संसार की और ना ही निरंकार की। क्योंकि जब हर पल हम प्रभु की शरण में हैं तो उसकी खोज कैसी? ये तो एक ऐसा अहसास है जिसे खोजा नहीं, बल्कि महसूस किया जाता है। कुदरत के एक-एक जर्रे में परमार्थ का नाम दिया है। परमार्थ, सेवा, त्याग, तपस्या और निस्वार्थ प्रेम-व्यवहार को अपनी प्रमुख नीति बना लेने से आपका जीवन आनन्द से परिपूर्ण हो जाता है। जीवन का अमर फल उसे ही प्राप्त होता है जो स्वार्थ की अपेक्षा परमार्थ को अधिक महत्व देता है।

मैथिलिशरण गुप्त जी ने कविता की पंक्तियों में कहा है - प्रभु श्रीराम का संदेश है कि -

संदेश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग लोक का लाया।
मैं तो इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया॥[3]

स्वयं प्रभु श्रीराम कहते हैं कि मैं अपने जीवों का उद्धार करने ही इस धरती पर अवतार लेकर आया हूँ, मैं यहाँ पर स्वर्ग लोक का कोई संदेशा नहीं लाया हूँ, मैं तो इस सम्पूर्ण धरातल को ही स्वर्ग नगरी बनाने आय हूँ। यानि मानव जीवन पर उपकार करने में इस धरती पर आया हूँ। इसलिए भगवान सिर्फ वहाँ ही नहीं होते जहाँ हम प्रार्थना करते हैं। भगवान वहाँ भी होते हैं, जहाँ हम गुनाह करते हैं। इसलिए ईश्वर से नहीं, अपने कर्मों से डरिये। माना कि हम किसी का भाग्य तो नहीं बादल सकते, लेकिन अच्छी प्रेरणा देकर किसी का मार्गदर्शन तो कर ही सकते हैं। भगवान कहते हैं कि यदि आपको जीवन में कभी ऐसा मौका या अवसर मिले तो "सारथी बनो, स्वार्थी नहीं"। इसलिए ऐ प्राणी, तू परमार्थ की खोज कर, पर उपकार कर, निस्वार्थ भाव से सेवा कर। जब कोई व्यक्ति ईश्वर के

सहारे अपने जीवन का परम अर्थ खोज लेता है तो वही परमार्थ पर चलने योग्य होता है।

तुलसीदास जी कहते हैं –

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान,
तुलसी दया न छोडिये, जब लगे घट में प्राण।[4]

कहा है कि हमें हमेशा सभी के प्रति दया भाव ही रखना चाहिए। धर्म, दया भावना से ही उत्पन्न होता है और अभिमान से तो केवल पाप ही जन्म लेता है। इसलिए मनुष्य के शरीर में जब तक प्राण है तब तक दया भावना कभी नहीं छोड़नी चाहिए। गुरु जम्भेश्वर भगवान ने भी अपनी वाणी द्वारा 120 सबद व 29 धर्म नियमों को बतलाते हुए एक-एक सबद की सूक्ष्म से सूक्ष्म बात बतलाते हुए कहा है कि परमार्थ व परोपकार करने से ही मोक्ष रूपी मार्ग के द्वारा खुल जायेंगे। गुरु जी ने कहा कि जीवों पर दया भाव रखो। इन्हीं शुभ कर्मों से तुम्हारा हृदय पवित्र होगा तथा तुम्हारे पापों का नाश होगा।

जाप जपो निज तल को, पावन होय शरीर॥[5]

गुरु जी कहते हैं कि परमात्मा का जाप करते रहो जिससे तुम्हारा हृदय व शरीर पवित्र होगा। मन की चंचलता को वश में करके ज्ञान धारण करो।

"ओ३म तन मन धोइये संजम होइये, हरख न खोइये।[6]

सबद-76 में गुरु जी ने बतलाया है कि सर्वप्रथम प्रात: उठकर शौच, स्नान, दातुन के द्वारा शरीर की शुद्धि कीजिये। तत्पश्चात् मन को संध्या, वंदना, आरती, जप, हवन के द्वारा शुद्ध कीजिये। फिर भगवान विष्णु की शरण ग्रहण कीजिये।

ओ३म मूंड मुंडाये मन न मुंडायो, मूंहि अबलख दिल लोभी। अन्दर दया नहीं सुरकाने, निदंरा हड़ै, कसोभी॥[7]

गुरु भगवान ने कहा है कि तुमने शरीर के अंग सिर तथा मुँह को तो मूंडा लिया, इनके ऊपर जो केश थे उनको कटवा लिया है किन्तु चंचल मन को तो नहीं मूंडाया। तुझे तो निर्लोभी होना चाहिए था। तुम्हारे दिल में जीवों पर दया होनी चाहिए थी लेकिन उसका भी अभाव है। इस जिह्वा से परमात्मा के नाम का जाप करना चाहिए था।

ले कूंची दरबान बुलावों, दिल ताला दिल खोवो।[8]

सबद-86 में गुरु जी कहते हें कि तू निंद्रा में है। अपने हृदय पर तूने अज्ञानता का ताला लगा रखा है, "कुशल किसी रे भाई" यदि कुशलता चाहते हो तो सचेत हो जाओ, सद्बद्धि रूपी दरबान-पहरेदार को ज्ञान सचेतनता रूपी कूंचीतानी लेकर बुलाओ। वह ताला खोलकर काम, क्रोध, मोह, द्वेष, ईर्ष्या इन शत्रुओं को बाहर निकाल देगा। जब ये शत्रु बाहर निकल जायेंगे, तब दया, करूण, प्रेम, संतोष, समता इत्यादि गुणों का उदय हो जायेगा। यही जीवन की सफलता का मूल मंत्र है।

ओ३म जुग जागो जुग जाग पिरांणी, कांय जांगता सोवो।

गुरु जाम्भेश्वर जी ने कहा है कि तू जाग, सचेत हो, अचेत अवस्था में क्यों पड़ा है? सचेत होकर जीवन की भलाई के लिए कर्तव्य कर्म कर। हे प्राणी, तू जागते हुए भी क्यों सो रहा है? विष्णु नाम का ध्यान करके आवागमन के बंधन से मुक्त होकर मोक्ष को पा।

ओ३म जां जां दया न मया, तां तां बिकरम कया।9
जां जां जीव न जोति, तां तां बिकरम कर्मू।
जां जां पाले न शीलूं, तां तां कर्म कुचीलूं।
जां जां खोज्या न मूलूं, तां तां प्रत्यक्ष थूलूं।
जां जां मेद्या न भेदूं, तो सुरगे किसी उमेदूं।
जां जां घमण्डें स घमण्डूं, ताकै ताव व छायो, सूतै सास नशायों।

गुरु जी ने कहा है जिस व्यक्ति में दया भाव तथा प्रेमभाव नहीं है, उस व्यक्ति से कभी शुभ कर्म नहीं हो सकते, वह सदा ही मानवता के विरूद्ध कर्म करेगा। दया तथा प्रेम भाव शुभ कर्मों का मूल है। जहाँ अतिथि का आदर सत्कार नहीं अर्थात् "आओ बैठो, पीयों पाणी, ये तीन बात मोल नहीं आणी" उस घर में कभी भी स्वर्ग जैसा सुख नहीं हो सकता। जिस भक्त ने प्रत्येक जीव में उस परमात्मा की ज्योति का दर्शन नहीं किया, तब तब उसकी मुक्ति नहीं हो सकती। "ऋते ज्ञानात् न मुक्ति" ज्ञान बिना मुक्ति संभव नहीं होती। जिस व्यक्ति में दयाभाव, धर्म नहीं है, वह सदा ही धर्म विरूद्ध पापमय कर्म करेगा। दयाभाव, प्रेमभाव, नम्रता, शीलता, धार्मिकता में मानव के भूषण हैं। जिस मानव ने शील व्रत का पालन नहीं किया, नम्रता का व्यवहार नहीं किया, वह कभी भी सज्जनता से सत्य व्यवहार नहीं करेगा। वह सदा ही कुटिलता का व्यवहार ही

करेगा। जिस साधक ने परमात्मा की खोज नहीं की, उसने अपना जीवन व्यर्थ ही गंवाया है। जिस मानव ने ज्ञान प्राप्त नहीं किया, उसे स्वर्ग सुख की प्राप्ति नहीं होती। जो व्यक्ति अभिमान करता है उसका श्वास तो निंद्रा के वशीभूत होने पर ही निकल जायेगा। अपने अभिमान को त्याग जीवन के मूल को जान, परमार्थ को खोज व मोक्ष पा।

कोई कोई भल मूल सींचीलों, भल तंत बूझीलों।
जा जीवन की बिध जाणी।[10]

कि इस संसार में कई ऐसे विरले लोग भी हैं जो अच्छे मूल स्वरूप भगवान विष्णु को अपने जीवन में अपनाते हैं और वे लोग किसी सज्जन संत पुरुष से भले तत्व की प्राप्ति की बात पूछते हैं। जो ऐसा करते हैं वे लोग ही जीवन की विधि जीने की कला व तरीका जानते हैं। वे लोग जीवन को सफल कर लेते हैं। यह जीवन सुखमय व्यतीत करते हैं तथा परलोक भी सुखमय बना लेते हैं। यही परमार्थ की खोज है। जिसने परमार्थ को खोज लिया, उसी ने मोक्ष को पा लिया। इस जीवलोक में स्वयं के लिए तो सभी जीते हैं लेकिन जो परोपकार के लिए जीता है, वही सच्चा जीवन होता है।

गीता में भी कहा है –

परोप्रकृति कैवल्ये तोलयित्वा जनार्दनः।
गुर्वीमुपकृतिं मत्वा हावतारान् दशाग्रहीत्॥[11]

स्वयं विष्णु भगवान ने परोपकार और मोक्षपद दोनों को तोलकर देखा तो उपकार का पल्ला ज्यादा झुका हुआ दिखा। इसलिए परोपकार उन्हीं ने इस धरा पर दस अवतार लेकर जीवों के कल्याण की कामना की। परोपकार पुण्यकारक है। सूर्य, चन्द्र, बादल, गाय, नदी और सज्जन में हर एक युग में ब्रह्मा ने परोपकार के लिए निर्माण किये हैं।

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः परोपकाराय वहन्ति नद्याः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः परोपकारार्थ भिदं शरीरम्॥12

परोपकार के लिए वृक्ष फल देते हैं, नदियां परोपकार के लिए ही बहती हैं और गाय परोपकार के लिए दूध देती हैं अर्थात् यह शरीर भी परोपकार के लिए ही है। परोपकार से बढ़कर कोई कर्म व धर्म नहीं। इसलिए परोपकारी बनो।

संदर्भ :-

1) डॉ. तुलसीराम – पुस्तक नैतिक शिक्षा, प्रकाशन नई दिल्ली।
2) अभिलाषदास – कबीरदास जी की अमृतवाणी सटीक (मोक्ष शास्त्र) दोहे।
3) डॉ. विवेक शंकर – हिन्दी काव्य, प्रकाशक राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी (जयपुर)
4) प्रो. बाबूराम – गुरु नानक देवकाव्य और चिन्तन धारा, साहित्य, संस्थान, गाजियाबाद।
5) डॉ. हीरालाल – जाम्भोजी साहित्य।
6) आचार्य कृष्णानन्द जी – जाम्भा पुराण, बिश्नोई मंदिर ऋषिकेश।
7) आचार्य कृष्णानन्द जी – शब्दवाणी, जम्भसागर बिश्नोई मंदिर ऋषिकेश।
8) वही – शब्दवाणी जम्भसागर।
9) वही – शब्दवाणी जम्भसागर।
10) मांगीलाल बिश्नोई (अज्ञात) – बिश्नोई धर्म 'प्रदीपिका' प्रकाशक बिश्नोई सेवक श्री बाला जी, जिला नागौर (राज.)
11) ऊषा – 'भगवदगीता कहती है, पुस्तक सुरभि प्रकाशन।
12) श्रीमद्भागवद्गीता – प्रकाशक एवं मुद्रक – गीता प्रेस, गोरखपुर, गोबिन्द भवन – कार्यालय, कोलकाता का संस्थान।

–डॉ. माया
सहायक प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग
दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हिसार
मो.: 94668 67429

लेखकों के लिए सूचना

अमर ज्योति पत्रिका में नियमित रूप से अपनी रचनाएं व आलेख भेजने वाले समस्त लेखकों व रचनाकारों को सूचित किया जाता है कि पत्रिका की मेल आईडी editor@amarjyotipatrika.com तकनीकी कारणों से बाधित है। अतः आप सभी से निवेदन है कि भविष्य में अपनी रचनाएं व आलेख भेजने के लिए पत्रिका की मेल आईडी editoramarjyotipatrika@gmail.com का प्रयोग करें।

आन देव को चित ना लावो

गुरु जाम्भोजी ने एक नव सतपंथ का सृजन कर पूरी मानवता को उस पर चलने के लिए प्रेरित किया। मानव मात्र को जीव के कल्याण के लिए पंथ की आचार संहिता के रूप में कुछ मर्यादा की डोर भी थमाई। जो उपदेश गुरु जाम्भोजी ने अपनी वाणी के माध्यम से दिए वो समस्त धर्मशास्त्रों व दर्शनों का सार है। उन्होंने जीवन जीने की एक सहज व सरल पद्धति दी उन्होंने अपनी वाणी से पाखंड, दिखावे व कर्मकांड का खंडन किया। वे तो भगवान कृष्ण के कर्म उपदेश को ही अपनी पूरी सबदवाणी में प्रकट करते हैं। हमें अपने पंथ के मूल मर्म को तो समझना ही चाहिए। किसी भी धर्म या सम्प्रदाय में पूजा पद्धति व उपासना का विशिष्ट स्थान होता है साथ ही वो उस धर्म या संम्प्रदाय को अन्य से भिन्न बनाता है। ठीक उसी प्रकार हमारे पंथ में भी पूजा व उपासना की पद्धति तथा गुरु जाम्भोजी ने किसे पूज्य बताया, किस-किस की उपासना को वर्जनीय बताया तथा किस परमसता की शरण में जाने का कहा है, यह हर बिश्नोईजन को वाकिफ होना चाहिए। तभी तो हम अपने पंथ के मर्म को सही अर्थों में समझ सकेंगे, जब हमें अपने पंथ की उपासना व पूजा पद्धति का ही पता नहीं है तो ये सिर्फ थोथी धार्मिकता है और हम अब भी भटके हुए हैं।

अब बात आती है विश्व के इस अद्वितीय सम्प्रदाय की उपासना व पूजा पद्धति कैसी है, गुरु जाम्भोजी ने इस बारे में क्या कहा है, हमें किन की पूजा करनी चाहिए तथा किन की नहीं, गुरु जाम्भोजी प्रदत्त पूजा व उपासना की पद्धति क्या है? उनके द्वारा सुझाया गया मार्ग कौन-सा है?

गुरु जाम्भोजी की सबदवाणी से ज्ञात होता है कि उन्होंने जो मार्ग बताया, उसका जिक्र सबद 5 में मिलता है। इस सबद में गुरु महाराज कहते हैं-

अइयालो अपरम्पर वाणी, म्हे जपां न जाया जीयूं।

अर्थात गुरु महाराज कहते हैं कि मेरी वाणी तो अपरम्पर है यानि तुम लोग जिनकी परम्परा से उपासना करते आये हो और अब भी कर रहे हो, ऐसी परम्परा वाली उपासना मैं नहीं करता। मैं तो परम देव की मन, वचन और कर्म से उपासना व जप करता हूँ और आप लोग भी उसी की उपासना करो। जन्में हुए जीवों की उपासना व जप नहीं करते, आप लोग करते हो तो छोड़ दीजिए। जन्मा जीव तो स्वयं असमर्थ है, कमजोर व्यक्ति किसी और की क्या सहायता कर सकता हैं?

नव अवतार नमो नारायण,

तेपण रूप हमारा थीयूं।

परम् सतावान भगवान विष्णु के नव अवतार हुए हैं। ये नव अवतार ही नमन करने के योग्य हैं। इनके अतिरिक्त अन्य जन्मा जीव उपास्य नहीं है तथा ये नव अवतार गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि मेरे ही स्वरूप हैं। देश, काल व शरीर भिन्न होते हुए भी तत्व रूप से तो मैं और यह नव अवतार एक ही हैं।

जपी तपी तक पीर ऋषेश्वर,

कायं जपीजे तेपण जाया जीयूं।

जन्में हुए जीव जिनका लोग जप करते हैं, ये जो यती, तपस्वी, फकीर, ऋषि, मंडलेश्वर इत्यादि सब जन्में जीव हैं। हे लोगों, इनका जप क्यों करते हो।

खेचर भूचर खेत्रपाला परगट गुप्ता,

कायं जपीजे तेपण जाया जीयूं।

आकाश में विचरण करने वाले, धरती पर रहने वाले खेतपाल, भूत, भोमिया इत्यादि सब जो कुछ तो परगट हैं व कुछ गुप्त हैं इनको आप क्यों जपते हो, ये तो जन्में हुए जीव हैं।

वासग शेष गुणिदा फुणिदा,

कायं जपीजे तेपण जाया जीयूं।

वासुगी नाग, शेषनाग, मणिधारी नाग या फनधारी नागराज ही क्यों ना हों, ये सभी जन्में हुए जीव हैं इसलिए ये जप करने के योग्य नहीं है फिर इनको नीचे पड़-पड़ क्यों धोक लगा रहे हो।

चौषट जोगनी बावन भैरुं,

कायं जपीजे तेपण जाया जीयूं।

चौषट प्रकार की योगनीयां व बावन प्रकार के भैरव जो देहातों में पूजे जाते हैं ये सब जन्म-मरण वाले

जीव हैं इनकी आराधना सदा वर्जनीय हैं। आप लोग क्यों भोपों पुजारियों के चक्कर में पड़कर धन, बल व समय को व्यर्थ में बरबाद कर रहे हो।

जपां तो एक निरालंब शम्भू,
जिहिं के माई ना पीयूं।

एक निराकार, निरालंब, निरंजन शम्भू का ही हम जप करते हैं जिनके ना तो कोई माता हैं और ना ही कोई पिता अर्थात जो सर्वशक्तिमान है जो इस सृष्टि का सृजनकर्ता है।

न तन धातु न तन रक्तु, न तन ताव न सीयूं।

उसका शरीर किसी रक्त व धातु से नहीं बना हैं जो स्वयं मृत्यु से रहित हो, किंतु सभी जीवों का एक मूल स्थान है जहाँ से सब जीवों का उद्‌गम होता है और अंत में वही जाकर विलीन हो जाते हैं, ऐसे परम तत्व को खोजना चाहिए।

इसलिए हे लोगों! मेरा मार्ग कुछ विचित्र है किंतु सत्य है, सनातन है, संसार की लीक से हटकर है तो आप आश्चर्य मत करना अत: मैं जन्में जीव का जप नहीं करता, जो स्वयं ही फंसे हैं वे दूसरों को कैसे मुक्ति दिला सकते हैं? ध्यान देने की बात है कि आजकल लोग सर्प दंश में उनको पूजते हैं जो स्वयं सांप के काटने से मरे हैं, बड़ी अजीब विडंबना है हम सड़क पर चलते समय कोई अनहोनी ना हो, इसलिए उनका जप करते हैं जो खुद सड़क दुर्घटना में मर गए। आखिर मेरे इस समाज को हो क्या गया?

आखिर हम कहाँ जा रहे हैं? आज एक लिहाज से देखें तो अंधविश्वास का जाल फिर से पनपने लग गया है, हम कहीं तो सांपों के देवता के जा रहे हैं तो कहीं सड़क सुरक्षा के, कोई नाक, कान, गला का देवता हैं तो कोई चमड़ी का। वर्तमान में एक नया ट्रेंड चला है सतियों का। मेरे समझदार साथियों! बिश्नोई समाज में अमूमन तीन सौ गौत्र (एक अनुमान, हालांकि मुझे नियत संख्या तो पता नहीं) है। इस प्रकार हम सब अपने-अपने सतियों के मंदिर, पूजा-पाठ, उपासना व एक शाम सती दादी के नाम में ही उलझ कर रह जायेंगे तो यह गुरु जाम्भोजी प्रदत्त सुंदर समाज ताश के पतों की तरह बिखर जायेगा। कहीं -कहीं तो प्राय: देखा जाता है कि घरों में गुरु जाम्भोजी की तस्वीर के साथ-साथ कई साधुओं की तस्वीर रखी गयी है और उनके नाम स्मरण किया जा रहा है, क्या कोई जन्मा जीव गुरु जाम्भोजी के समकक्ष हो सकता हैं, कदापि नहीं। हाँ, किसी साधु की करनी अच्छी है तो उनकी कही बातों को अमल करो, उनके कृतित्व का अनुकरण करो, उनकी पूजा क्यों कर रहे हो?

आज हम फिर से तरह-तरह के भूत, भोमियों व भोपों के चंगुल में फँस रहे हैं। यह गुरु जाम्भोजी प्रदत्त समाज का हिस्सा नहीं हो सकता। पदमसिंह, ओम सिंह, बखत सिंह, नखत सिंह, डुंगर सिंह फलां-फलां, अरे, मूर्ख मानवी क्यूँ विरथा भटके, गुरु जाम्भोजी की बात मान, भगवान विष्णु की शरण में जा, उस परम सत्ता को पूज जिससे जीव का कल्याण हो सके, तेरा जन्म मरण मिट सके गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि जीये को जुगति (धन धान वैभव) व मुवे को मुक्ति (जन्म- मरण के बंधन से मुक्ति) मिलेगी। यहाँ तो आत्माएं खुद का ही मोक्ष नहीं कर पाई, ऐसे भटके लोगों की शरण में जाने से तुझे क्या मिलेगा? क्या ये सब जन्में जीव उपासना के लायक हैं? क्या इनकी पूजा जाम्भाणी जीवन पद्धति का हिस्सा है? क्या ये गुरु जाम्भोजी से भी ज्यादा चमत्कारिक व दिव्य शक्तियां हैं? क्या इनके पूजा से जीव का कल्याण हो सकता है? अगर अपने-अपने क्षेत्र में क्षेत्रपालों की शक्तियां इतनी ही अधिक हैं तो फिर जाम्भोजी की बातों की शायद जरूरत ही नहीं होगी। अगर हम यह मानते हैं कि गुरु जाम्भोजी भगवान विष्णु के अवतार रूप में एक दिव्य शक्ति थी जिसने हमें मुक्ति का मार्ग दिया तो फिर उस चंगुल में आप क्यूँ फँस रहे हैं? यह निर्णय आप ही करो, दो राय मत रखो, एक म्यान में दो तलवार मत डालने की कोशिश करो।

एक आदमी ने खंभा पकड़ रखा था और जोर जोर से चिल्ला रहा था, अरे, कोई मुझे छुड़वाओ, मुझे कोई छुड़वाओ। अरे भले मानुष! खंभे ने तुझे थोड़े ही पकड़ रखा है, तूने खंभे को पकड़ रखा है छोड़ दे बस।

ठीक उसी तरह यह जो तरह-तरह के खंभे पकड़ रखे हैं उनको छोड़ दो और गुरु जाम्भोजी की शरण ले लो, इस भव सागर से नैया पार हो जायेगी।

- **ओम प्रकाश ईशरवाल,** अध्यापक
ग्राम- बिश्नोई चक, तह.- फलोदी,
जिला- जोधपुर (राज.)
मो. 8619698610

शुद्ध पुरुषार्थ है 'आत्म दर्शन'

पारिवारिक मोह बाधक बनता है, पहले मनुष्य चाहता है कि वह उस परम सत्य को प्राप्त कर ले, किन्तु आगे बढ़ने पर वह देखता है कि इन मधुर सम्बन्धों का विच्छेद करना होगा, तब हताश हो जाता है। वह पहले से जो कुछ धर्म-कर्म मानकर करता था, उतने में ही संतोष करने लगता है। अपने मोह की पुष्टि के लिए वह प्रचलित रूढ़ियों का प्रमाण भी प्रस्तुत करता है। इन्हीं कुरीतियों में फँसकर मनुष्य पृथक-पृथक धर्म, अनेक सम्प्रदाय छोटे-बड़े गुट और असंख्य जातियों की रचना कर लेता है। कोई नाक दबाता है, तो कोई कान फाड़ता है। किसी के छूने से धर्म नष्ट होता है, तो कहीं रोटी-पानी से धर्म नष्ट होता है। तो क्या अछूत या छूने वालों का दोष है? कदापि नहीं! दोष हमारे सम्प्रदायों का है। धर्म के नाम पर हम कुरीति के शिकार हैं इसलिए दोष हमारा है।

महात्मा बुद्ध के समय में केश-कम्बल एक सम्प्रदाय था, जिसमें केश को बढ़ाकर कम्बल की तरह प्रयोग करने को पूर्णता का मानदण्ड माना जाता था। कोई गाय की भाँति रहने वाला था, तो कोई कुत्ते की तरह खाने-पीने, रहने वाला था। ब्रह्मविद्या का इनसे कोई सम्बन्ध नहीं है। सम्प्रदाय और कुरीतियाँ पहले भी थी, आज भी हैं। ठीक इसी प्रकार गुरु जाम्भोजी के समय भी थीं। कृष्णकाल में भी सम्प्रदाय थे, कुरीतियाँ थी। उनमें से एकाध कुरीति का शिकार अर्जुन भी थे। उन्होंने ने भगवान कृष्ण के समक्ष युद्ध न करते हुए चार तर्क प्रस्तुत किए - (1) ऐसे युद्ध से सनातन धर्म नष्ट हो जायेगा। (2) वर्णसंकर पैदा होगा। (3) पिण्डोदक क्रिया लुप्त होगी। (4) हम लोग कुलक्षय द्वारा महान पाप करने को उद्यत हुए हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा अर्जुन - इस विषम स्थल में तुझे यह अज्ञान कहाँ से हो गया? विषम स्थान जिसकी समता का सृष्टि में कोई स्थल है ही नहीं, पारलौकिक है लक्ष्य जिसका, ऐसे निर्विवाद स्थल पर तुझे अज्ञान कहाँ से हुआ? अज्ञान क्यों, अर्जुन तो सनातन धर्म की रक्षा के लिए कटिबद्ध है। क्या सनातन धर्म की रक्षा के लिये प्राण-पण से तत्पर होना अज्ञान है? श्रीकृष्ण कहते हैं - हाँ यह अज्ञान है। न तो सम्मानित पुरुषों द्वारा इसका आचरण किया गया है, न यह स्वर्ग ही देने वाला है और न यह कीर्ति को ही करने वाला है। सन्मार्ग पर जो दृढ़तापूर्ण आरूढ़ है, उसे आर्य कहते हैं। गीता आर्य संहिता है। परिवार के लिए मरना-मिटना यदि अज्ञान न होता तो महापुरुष उस पर अवश्य चले होते। यदि कुलधर्म ही सत्य होता तो स्वर्ग और कल्याण की निःश्रेणी अवश्य बनती। यह कीर्तिदायक भी नहीं है। मीरा भजन करने लगी तो 'लोग कहे मीरा भई बावरी, सास कहे कुल नाशी रे', जिस परिवार, कुल और मर्यादा के लिए मीरा की सास बिलख रही थी, आज उस कुलवन्ती सास को कोई नहीं जानता, मीरा को विश्व जानता है। ठीक इसी प्रकार परिवार के लिए जो परेशान है, उनकी भी कीर्ति कब तक रहेगी? जिसमें कीर्ति नहीं, कल्याण नहीं, श्रेष्ठ पुरुषों (महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी) ने भूलकर भी जिसका आचरण नहीं किया तो सिद्ध है कि सब अज्ञान है। अतः इस अज्ञानता के मार्ग को त्यागकर महापुरुषों ने जो सद्मार्ग बताया है उसी मार्ग का अनुसरण आत्म कल्याण के लिए करना होगा।

इसी आत्म दर्शन का ज्ञान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को करवाया है -

क्लैब्यम् मा स्म गमः पार्थ नैतत्वय्युपपद्यते।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं व्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप॥

अर्थात् - अर्जुन! नपुंसकता को मत प्राप्त हो क्या अर्जुन नपुंसक था? क्या आप पुरुष है? नपुंसक वह

है जो पौरुष से हीन हो। सब अपनी समझ से पुरुषार्थ ही तो करते हैं। किसान दिन-रात खून-पसीना एक करके खेत में पुरुषार्थ ही तो करता है। कोई व्यापार में पुरुषार्थ समझता है, तो कोई पद का दुरुपयोग करके पुरुषार्थी बनता है।

जीवन भर पुरुषार्थ करने पर भी खाली हाथ जाना पड़ता है। स्पष्ट है कि यह पुरुषार्थ नहीं है। शुद्ध पुरुषार्थ है 'आत्म दर्शन'।

गार्गी (महान विदूषी) ने याज्ञवल्क्य से कहा -

नपुंसकः पुमान् ज्ञेयो यो न वेत्ति हृदि स्थितम्।
पुरुषं स्वप्रकाशं तमानन्दात्मानमव्ययम।

(आत्मा पुराण)

अर्थात् - वह पुरुष होते हुए भी नपुंसक है, जो हृदयस्थ आत्मा को नहीं पहचानता। वह आत्मा ही पुरुषस्वरूप स्वयं प्रकाश, उत्तम, आनन्द युक्त और अव्यक्त है। उसे पाने का प्रयास ही पौरुष है।

अतः मानव मात्र को गुरु जम्भेश्वर भगवान के बताए हुए मार्ग पर चलते हुए वर्तमान समय में हृदयस्थ आत्मा को पहचानना होगा। इस भौतिकवाद की चकाचौंध को त्यागना होगा और आत्म दर्शन के लिए दानवीर, कर्मवीर, धर्मवीर बनना होगा।

इस काया रूपी घट में निवास करने वाली आत्मा को पहचानने के लिए अन्तःकरण को कर्म यज्ञ, ज्ञान यज्ञ, दान यज्ञ द्वारा शुद्ध करना होगा। गुरु महाराज के बताये हुए 29 नियम, 120 शब्दों का अनुसरण करते हुए जीवन का परम् कल्याण करना होगा।

इस सांसारिक मोह माया, अनुराग, राग-द्वेष को त्याग करना होगा और आत्मा को पहचानना होगा।

आत्मा ही सत्य है, आत्मा ही पुरातन है, आत्मा ही शाश्वत और सनातन है। अतः हृदयस्थ आत्मा को पहचानो।

- **रामचन्द्र** (वरि. अध्यापक), हिन्दी
राज्य स्तरीय सम्मानित शिक्षक, रा.उ.मा. विद्यालय
961 RD, मुख्य नहर, बज्जू, बीकानेर
Email: rcdudi123@gmail.com
मो. 9660723691

पेड़ (पर्यावरण)

जीवन के शृंगार पेड़ हैं।
जीवन के आधार पेड़ हैं।
ठिगने-लम्बे-मोटे-पतले।
भांति-भांति के डार पेड़ हैं।
आसमान में बादल लाते हैं।
वर्षा के हथियार पड़े हैं।
बीमारों को दवाई हैं देते।
प्राण वायु औजार पेड़ हैं।
रबड़, कागज, लकड़ी देते हैं।
पक्षियों के घरबार पेड़ हैं।
शीतल छाया फल देते।
कितने ये दातार पेड़ हैं।
खुद को समर्पित करने वाले।
ईश्वर के आधार पेड़ हैं।
जीवन के शृंगार पेड़ हैं।
जीवन के आधार पेड़ हैं।

-ऋषि राम बिश्नोई (से.नि.)
पुलिस रे.अनु. अधिकारी
गाँव व डा. भगवानपुर, मुरादाबाद (उ.प्र.)
मो.: 7351092457

जल संरक्षण का महत्त्व एवं तकनीकें

पंच महाभूतों में जल का विशेष महत्व है, क्योंकि जल से ही जीवन की उत्पत्ति होती है और जल ही जीवन का आधार है। जल शक्ति भी है। जल को वरूण के रूप में देवता माना जाता था। इंद्र को वर्षा का देवता माना जाता था। नौ अवतारों में पहला अवतार मच्छ भी जल में ही हुआ। दूसरा अवतार कच्छ भी अधिकतर समय जल में ही बिताता था। इसीलिए प्राचीन काल से ही जल को बहुत ही महत्व दिया जाता रहा है। इसके महत्व, शक्ति, सम्मान, संग्रहण, संरक्षण, संवर्धन के लिए ही जल की पूजा का विधान शुरू हुआ। लेकिन आज हमने इसे एक औपचारिकता, रिवाज, संस्कार मात्र ही समझ लिया है। पुरातन समय में पीने, नहाने, धोने, भोजन और अन्य दैनिक कार्यों के निष्पादन के साथ-साथ जल यातायात का भी साधन था, इसीलिए सभी मानव सभ्यताएं जल के किनारे या आसपास ही शुरू और विकसित हुई।

इसके महत्व की वजह से ही जल संरक्षण और जल संवर्धन भी प्राचीन काल से ही होता आ रहा है, जल को सहेज कर रखा जाता था। आज इसकी आवश्यकता अत्यधिक हो गई है। प्राचीन भारतीय सभ्यताओं में भी जल सरंक्षण के अनेकों प्रमाण मिलते हैं। वेदों और अन्य प्राचीन ग्रंथों में भी जल सरंक्षण के सूत्र मिलते हैं। प्राचीन और परंपरागत जल स्रोतों का पुनरोद्धार करना होगा और जल संग्रहण, सरंक्षण और संवर्धन के तरीकों को अपनाना होगा। वरना धरती पर जीवन दुर्लभ हो जायेगा। आओ विचार करें कि प्राचीन समय में जल संग्रहण, संरक्षण और संवर्धन कैसा होता था, उनसे हम क्या शिक्षा ले सकते है, उनका अब क्या हाल है, आधुनिक समय में कैसे हो रहा है और भविष्य में करने के लिए अभी से ही क्या योजना बना सकते है?

I) प्राचीन समय में और परंपरागत तरीके से जल संरक्षण और संवर्धन

भारत के ऋषि मुनियों, गुरुओं, अवतारों, देवताओं, सिद्ध पुरुषों ने जल सरंक्षण को धर्म से जोड़ दिया था ताकि लोग भूलें नहीं, रुचि लें और कर्तव्य, परोपकार और पुण्य लाभ के लिए जल सरंक्षण करें। इन ऋषियों, गुरुओं ने अपने श्रद्धालुओं और आमजन की उपस्थिति में अपने हाथों से जल स्रोतों का शुभारंभ और समापन करवाया, ताकि अन्य लोग भी जल का महत्व समझें और जल संरक्षण के लिए प्रेरित हों और अन्यों को भी प्रेरित करें। प्याऊ और अन्य माध्यमों से जल दान को उत्तम दान माना जाता था।

इसीलिए स्थिति और स्थानानुसार सभी तरह के जल स्रोतों का संरक्षण होता था। कुछ जल स्रोत प्राकृतिक बने हुए होते थे, कुछ को आवश्यकतानुसार बनाया जाता था, लेकिन वे भी प्रकृति के अनुकूल ही होते थे। इन सभी जल स्रोतों से हमें सीखने की आवश्यकता है। अलग अलग स्थानों पर इन्हे अलग अलग नामों से जाना जाता है।

1) नदियां, नाले : नदियों को माता का स्थान दिया जाता था। इसलिए नदियों में कचरा नहीं डाला जाता था, गंदा नहीं किया जाता था। नदी में सीधे ही गंदे हाथ, पैर धोने की बजाय जल पात्र में जल लेकर बाहर दूर हाथ धोने की प्रथा थी। नदी में वस्त्र धोने के लिए भी अलग घाट की व्यवस्था थी। गुरु जांभोजी ने कहा था, 'निर्मल गंगा, निर्मल घाट' जे ओ धोबी जाने धोए, घर में मैला वस्त्र रहे न कोय' यानि वस्त्र भी धूल जाए और नदी और घाट भी निर्मल रह सकें। बस इसी व्यवस्था की तो आज आवश्यकता है। आज गंदे नालों, कच्चे सिवरेज और फैक्ट्रियों से निकले हानिकारक रसायन युक्त गंदे पानी को नदियों, नालों में जाने से रोकना है। उस पानी को शुद्ध करके ही नदी नाले में छोड़ना चाहिए। अगर ऐसा नही होता है तो उन फैक्ट्रियों को बंद कर देना चाहिए। नदियों, नालों की जमीन पर कब्जा हो रहा है, उसे रोकना चाहिए। इनके किनारों पर कचरा डालना भी प्रतिबंधित होना चाहिए। मरे हुए पशुओं, मृत शरीर को इसमें डालना बंद होना चाहिए। हमें पूजा के नाम पर जल में पूजा अवशेष फेंककर जल को प्रदूषित करने से रोकना होगा। सरकारें भी इस और ईमानदारी से ध्यान दें तो ये नदियां, नाले पुनर्जीवित हो सकते हैं। बहुत से देशों में नदियों को साफ करके उनके किनारे पक्के करके उन्हें जल मार्ग के रूप में और टूरिज्म के लिए विकसित किया गया है। काश, हमारे देश में भी इस दिशा में काम हों।

2) नदी पर बांध : बरसाती नदियों में बारिश के समय तो खूब पानी होता है लेकिन बारिश के बाद नदी सूख जाती है। इसके लिए उपयुक्त जगह पर बांध बनाए जाते हैं ताकि कुछ पानी को रोककर प्रयोग किया जा सके और फालतू पानी बांध के ऊपर से निकलकर आगे जा सके। गुरु

जांभोजी ने जैसलमेर में जैतसमंद बांध का उद्घाटन किया था। नदी पर बांध बनाने से कुछ नुकसान भी होते हैं और कुछ लोग और संस्थाएं इनका विरोध भी करते हैं। लेकिन अच्छी तरह से सर्वेक्षण करके फायदे, नुकसान, आवश्यकता की ईमानदारी से समीक्षा करके लोगों में जागरूकता लाकर इस विरोध को और हानियों को कम किया जा सकता है।

3) तालाब, ताल, पोखर : गांवों के लिए तालाब सबसे विश्वसनीय स्रोत होते थे। तालाब के चारों ओर भूमि को सुरक्षित और साफ रखने के लिए औरण (देवताओं के नाम पर पवित्र और सुरक्षित वन) बनाए जाते थे। तालाब खुदवाना, साफ करवाना, भरवाना बहुत ही पुण्य और परोपकार का कार्य समझा जाता था। इसलिए राजा, महाराजा, महापुरुष, परोपकारी, धनवान तालाब बनवाते थे। गुरु जांभोजी ने जांबा गांव में बहुत बड़ा तालाब बनवाया, जिसे जम्भ तालाब के नाम से जाना जाता है बारिश के समय तालाब गंदा नहीं हो, इसलिए बारिश से पहले तालाब के आसपास के क्षेत्र को साफ किया जाता था। कुछ कार्य तालाब के किनारे और आसपास वर्जित थे ताकि तालाब का जल गंदा ना हो। पशुओं के लिए अलग घाट और मनुष्यों के लिए अलग घाट बनाए जाते थे। या फिर पशुओं के लिए जोहड़ बनाए जाते थे। सफाई का पूरा ध्यान रखा जाता था। तालाब के आसपास बनी हुई बैरियों (छोटे कुंए) में रिसाव का मीठा पानी सहेजा जाता था। जो गंभीर संकट में काम आता था। आज तालाब की भूमि पर लोग कब्जा करते जा रहे हैं, कूड़े के ढेर डाल रहे है। कुछ तालाब तो गायब ही हो गए है। तालाबों तक पहुंचने वाले रास्ते और उसके ढाल को भी लोगों ने बंद कर दिया है, जिसकी वजह से वर्षा के पानी से गलियां भर जाती है लेकिन तालाब सूखे रह जाते हैं। हमें तालाबों को और इनके आसपास की औरण को पुनर्जीवित करना होगा, सरंक्षित करना होगा।

4) कुंआ : पहले गांव वहीं बसाया जाता था, जहां कुएं का पानी मीठा होता था। गांव के लोग मिलकर कुंआ बनवाते थे। ऊंट या बैलों और मनुष्यों की मदद से मशाल से पानी बाहर निकाला जाता था। आज बहुत से कुएं ढह गए हैं, कचरे से भर गए हैं, विषाक्त हो गए हैं, कुओं की भूमि पर कब्जे हो गए हैं। ये कुएं हमारी धरोहर हैं, इनकी भूमि के चारों तरफ दीवार या तार लगाकर सरंक्षित किया जाना चाहिए। ये वर्षा के पानी को साफ करके भूमि में रिचार्ज करने के काम में लिए जा सकते हैं। इनकी मरम्मत करके, मोटर और पाइप लगाकर, शुद्ध कर पीने के पानी को प्राप्त किया जा सकता है।

5) बावड़ी : चौकोर या गोलाई में गहराई में मानव निर्मित ये पक्की और सुंदर संरचनाएं होती है। इनमें पानी खारा नहीं होता है। राजा महाराजा या धनाढ्य व्यक्ति बावड़ी बनवाते थे खासकर कस्बों, शहरी इलाकों में ताकि वर्षा के संग्रहित पानी को लोग सीढ़ियों से सुरक्षित बाहर निकाल सकें। इनकी सतह को और आसपास पक्का किया जाता था ताकि मिट्टी से पानी खराब ना हो। इनकी भूमि के चारों तरफ दीवार या तार लगाकर सरंक्षित किया जाना चाहिए ताकि इन्हें सरंक्षित किया जा सके। प्रत्येक किले और हवेली में जल संग्रह का कोई न कोई तरीका अवश्य होता था।

6) कुंड, टांका, हौद : गांवों , कस्बों में प्रत्येक घर में वर्षा के पानी का संग्रहण करने के लिए छतों के पानी को टैंकों, कुंडों में एकत्र किया जाता था। गांव के लोग मिलकर पक्की जगह पर खोदकर सामूहिक कुंड/टांका/टैंक बनाते थे ताकि वर्षा का पानी सुरक्षित किया जा सके। इनको ऊपर से ढका जाता था। बारिश से पहले कुंड के चारों ओर की जगह (कैचमेंट एरिया) को साफ रखा जाता था ताकि पानी गंदा ना हो। आज तो ये कुंड ढह गए हैं और इनकी कैचमेंट भूमि को लोगों ने कब्जा लिया है। ये कुंड हमारी धरोहर है, इनकी मरम्मत और देखभाल करके इनका सरंक्षण करना चाहिए।

7) झरने : पहाड़ों में ऊंची जगहों पर झरने भी शुद्ध जल के अच्छे स्रोत होते थे। आबादी बढ़ने से झरनों के पानी के रास्ते अवरूद्ध हो गए हैं इसलिए अब झरने भी कम हो गए है। पहाड़ी इलाकों में बांस से बनी पाइपों के द्वारा पानी को एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाया जाता था।

8) झीलें : वर्षा का पानी किसी नीची जगह पर एकत्र हो जाया करता था जो आसपास के लोगों, पशुओं और वन्य-जीव जंतुओं के लिए काम आता था। पहाड़ों में ऊंची जगहों पर बनी झीलों के आसपास नीची जगहों पर झालरा भी बनाए जाते थे जो रिसकर आने वाले पानी को सहेजते थे। लेकिन अब तो झील के आसपास कब्जा होने से झीलों में पानी आना कम हो गया है और कचरे से पानी गंदा होने लगा है।

9) हिमखंड (ग्लेशियर) : हिमखंड भी स्वच्छ जल का एक बड़ा और अच्छा स्रोत है। प्रकृति ने कितनी सुंदर व्यवस्था की है कि बर्फ के रूप में जल जमा होता रहता है खासकर सर्दियों में। बारिश में नदियां, तालाब, कुंड, झील, झरने इत्यादि जल स्रोत स्वयं ही भरते रहते हैं। और

जब गर्मी में बारिश कम होती है, हिमखंड पिघल कर नदियों को भरते रहते हैं। लेकिन अब ग्लोबल वार्मिंग की वजह से पानी के ये भंडार ग्लेशियर असमय में भी पिघल कर निरंतर कम होते जा रहे है।

10) **भूजल :** भूजल भी एक तरह का प्राकृतिक स्रोत ही है जो बारिश के पानी के धरती में रिसने से साफ होकर जमा होता रहता है। इसे भूमि में एकत्र होने में सदियों का समय लग जाता है। यह आपातकालीन स्थिति में पीने के लिए ही बना होता है। यह भूजल ही धरती को नम रखता है, जिससे असंख्य पेड़-पौधों और जीवों का जीवन यापन होता है। लेकिन लालची मनुष्य ने इसका अत्यधिक दोहन करके भू-जल स्तर को बहुत नीचे पहुंचा कर धरती को खोखला कर दिया है। इससे अब पेड़ भी सूखने लगे हैं, भूमि भी बंजर होने लगी है। पेड़ भी वर्षा के पानी को भूमि में पहुंचाने का कार्य करते हैं। भूमि की सतह को सड़कों, फुटपाथों, भवनों से कवर करने से अब वर्षा का पानी भूमि में नहीं जा पाता है।

11) **समुंद्र :** समुंद्र जल का सबसे बड़ा स्रोत है। नदियों का बचा हुआ पानी समुंद्र में समा जाता है। लेकिन समुंद्र का पानी खारा होता है इसलिए सीधा पीया नहीं जा सकता है। लेकिन यह यातायात का एक प्राचीन साधन है और इससे समुंद्र में असंख्य जीव पलते हैं। समुंद्र का पानी सूर्य की गर्मी और हवा से वाष्पित होकर साफ होकर आसमान में बादलों के रूप में चला जाता हे जो बारिश के रूप में धरती पर पुन: आता है। कई देशों में समुद्र के खारे पानी को गर्म करके उसकी भाप एकत्र कर ठंडा करके या आरो विधि से साफ पानी को प्राप्त किया जाता है जो बहुत महंगा विकल्प है। प्राकृतिक असंतुलन से, ग्लेशियर के पिघलने से समुद्र का पानी बढ़ता जा रहा है, जिससे समुद्र के किनारे बसे शहरों के डूबने का खतरा बढ़ गया है।

12) **बादल, वर्षा:** अधिकतर जल स्रोतों का मुख्य स्रोत बादल और वर्षा ही है। समुंद्र के पानी को साफ करके हवा के माध्यम से बादल, अलग-अलग जगहों तक पहुंचाते और बारिश के रूप में पानी को धरती पर भेजते हैं। ईश्वर की कितनी सुंदर व्यवस्था है ये जो बिना किसी धन, मनुष्य या संयत्र के निरंतर स्वत: ही चलती रहती है। मनुष्य तो इसमें व्यवधान न डालें उतना ही बहुत है। जलवायु परिवर्तन की वजह से असमय बारिश होती है, कहीं सूखा तो कहीं बाढ़ आती है।

12) **किसान द्वारा खेतों में बनाए जल स्रोत:** किसान भी अपने खेतों में बारिश के पानी को संग्रह करने के अनेकों तरीके अपनाते थे जैसे कि खड़ीन (वर्षा के पानी को बांध बनाकर अस्थाई तालाब), चेक डैम, छोटे बांध, नाडी, पौंड, टोबा, मेड़ इत्यादि। इनसे खेत में बरसा बारिश का पानी बाहर खेत से बाहर नही जाता था। इनमें पानी भरा रहता था जो खेत, मनुष्य और पशुओं के काम आता था और भूमि में नमी भी रहती थी, भू जल का स्तर भी बना रहता था। तापमान कम रहता था और आसपास में जैव विविधता पनपती थी।

इन सभी जल स्रोतों से हमें यही शिक्षा मिलती है कि जल बहुत ही कीमती है और इसे संग्रहित, सरंक्षित, संवर्धन करने की आवश्यकता है ताकि यह बहकर समुद्र में मिलकर बेकार होने की बजाय मनुष्यों, जीव जंतुओं, पेड़ पौधों और भूमि के काम आ जाए। ये सभी जल स्रोत अलिखित प्राकृतिक नियमों/सिद्धांतों के अनुसार चलते हैं। हमें इन प्राकृतिक सिद्धांतों को ही समझना है और पालन करना है। आधुनिक जल स्रोत भी प्राचीन जल स्रोतों के प्राकृतिक वैज्ञानिक नियमों के आधार पर ही बनने चाहिए जो सतत् हो और प्रकृति को नुकसान नहीं पहुंचाए।

हमें प्राचीन जल स्रोतों का भी संरक्षण करना है ताकि कम से कम नए जल स्रोतों का निर्माण करना पड़े।

II) आधुनिक जल स्रोत और जल संवर्धन

आओ अब विचार करते हैं कि आधुनिक जलस्रोत कौन-कौन से हैं? उनके फायदे, नुकसान और सीमाएं क्या है? उनको संरक्षित रखने के लिए और जल संवर्धन के लिए क्या-क्या करना चाहिए?

1) **बांध :** नदियों के पानी को बांधने, रोकने के लिए उपयुक्त जगहों पर ही बांध बनाए जाते हैं जहां कैचमेंट एरिया उपलब्ध होता है ताकि उनके पीछे पर्याप्त पानी एकत्र रहे, सुरक्षित रहे और नियंत्रित कर नहरों में डाला जा सके। लेकिन बांध बनाने से, उनके पीछे के कैचमेंट क्षेत्र में पानी का जल स्तर बढ़ने से वहां रह रहे लोगों को विस्थापित होने की समस्या आती है। उतने क्षेत्र की भूमि खराब हो जाती है और पेड़-पौधे भी मर जाते हैं।

2) **नहरें :** बांध के पीछे एकत्रित पानी को नियंत्रित करके आवश्यकता वाली जगहों पर नहरों के माध्यम से ले जाया जाता है।

क्रमशः आगामी अंक में..

- इंजी. आर.के. बिश्नोई
पर्यावरण प्रमुख, दिल्ली प्रांत, विद्याभारती
मो. 9899303026, Email: bishnoirk@gmail.com

फरवरी

फरवरी का महीना कुछ यू सा है,
जनवरी की ठण्ड के बाद
रजाई में बैठे एक सुकून-सा है।
नीली स्वेटर में सफेद ऊन-सा है,
कांपती ठण्ड में यह धूप-सा है॥
वैलेंटाइन-डे का जुनून-सा है,
गुलाबों का लाल गुलदसता-सा है।
एक प्रेमी का सबसे प्रतीक्षित महीना भी है,
शर्माती हुई प्रेमिका का नजर झुकाना भी है॥
उदास मन का एक गम भी है,
पलट कर न देखने का संकर्ष भी है।
खुशाली की इसमें एक परत भी है,
इस महीने में कुछ बात ही अलग-सी है,
पूरे साल की एक झलक-सी है॥
अंतिम परीक्षा का डर-सा है,
अगली क्लास में जाने का उत्साह अंतरंग है॥
कितना रंगीन है यह एक महीना,
भावनाओं का दरिया-सा है, यह एक महीना
फरवरी में कुछ बात ही अलग-सी है॥

-अर्चिता बिश्नोई
सुपुत्री डॉ. मक्खन सिंह मांझू-डॉ. स्नेह लता
सारंगपुर, हिसार

देखो समाचार-पत्र है आया

देखो, सामाचार-पत्र है आया
कितना सुन्दर, कितना प्यारा
देश-विदेश की सैर कराता
दीपावली का अर्थ बताता
दुर्गम दर्रों की ये सैर कराता
घर बैठे-बैठे ये सब समझाता
देखो, सामचार-पत्र है आया
लेखक, पाठक और सम्पादक
सबको अपना भागीदार बनाता
नेता-अभिनेता और घोटाले
सबके पर्दे फाश ये करता
भ्रष्टाचार को दूर भगाता
जनहित में सब कह जाता
इसे न ईर्ष्या, इसे न द्वेष
होली के मधुर रंग सजाता
ईद-मिलन को ये समझाता
देखो, सामाचार-पत्र है आया
देश-विदेश की खबरें लाया
बच्चों का भी दिल बहलाता
कहानी और चुटकले लेकर आता
दुनिया भर के विश्लेषण कर
सबको एक नजर में भाता
सुबह-सुबह से अपना इंतजार
सबको एक साथ है करवाता
देखो, सामाचार-पत्र है आया।

-कोमल बिश्नोई (खीचड़)
- जयसिह देशर (मगरा)
तह. नोखा, जिला - बीकानेर (राज.)
मो. 9680281006

बधाई सन्देश

प्रियांश बिश्नोई का नाम इण्डिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में दर्ज

फतेहाबाद: पूत के पांव पालने में ही पहचाने जाते हैं, इस कहावत को भली-भांति चरितार्थ किया है फतेहाबाद जिले के गांव बड़ोपल निवासी प्रियांश बिश्नोई पुत्र संदीप पौत्र नरसिंह बिश्नोई ने मात्र साढ़े पांच साल की उम्र में रिकॉर्ड बनाकर 'इण्डिया बुक ऑफ रिकॉर्ड' में अपना नाम दर्ज कराया है। प्रियांश बिश्नोई ने एक मिनट में 66 वस्तुओं के आविष्कारकों के नाम बिना रूके बताकर रिकॉर्ड बनाया है। प्रियांश बिश्नोई के पिता संदीप बिश्नोई जापान की एक कंपनी में काम करते हैं। वहीं उनकी माता प्रियंका बिश्नोई एसबीआई बैंक में कार्यरत हैं। जिस तरह से प्रियांश के माता-पिता पढ़ाई के प्रति समर्पित थे, उसी प्रकार माता-पिता के पदचिह्नों पर चलते हुए प्रियांश बिश्नोई ने अपनी बुद्धि की प्रतिभा से उनकी गरिमा को चार चांद लगा दिए हैं। बेटे की इस अचंभित करने वाली दिमागी शक्ति से उसके मां-बाप भी खासे प्रभावित हैं। प्रियांश अपने दादा-दादी के साथ अधिकतर समय बिताता है और खेल-खेल में बहुत से चीजें सीख लेता है।

आधुनिकता, धर्म और भारत

19वीं सदी के बाद 'धर्म' शब्द सबसे अस्पर्श्य वस्तु मान ली गई। यूरोप में ज्ञानोदय युग या प्रबोधन परियोजना (इनलाइटमेंट प्रोजेक्ट) के उदय के साथ ही आधुनिकता का जन्म हुआ। यूरोप और पश्चिम ने इसी आधुनिकता को पूरे विश्व को अपनाने के लिए बाध्य किया। चूंकि यह वह काल था जब ब्रिटेन की सत्ता का सूर्य अस्त नहीं होता था और यूरोप का पहरूआ उस समय ब्रिटेन बना हुआ था, उसे वहाँ उगी-जमी आधुनिकता को पूरे विश्व को मनवाने में जोर नहीं आया।

यह आधुनिकता ज्ञान, विज्ञान, बौद्धिकता, गैर रोमांटिसिज्म और अमिथकीय सिद्धान्तों को लेकर आई। इसने समाज जीवन को सुखी बनाने के संकल्प सामने रखे। धर्म की, ईश्वर को चलता कर दिया। प्रकृति को मानव क सहचरी मान लिया। अब यह माना जाने लगा कि जो जितना आधुनिक है, वह उतना ही मनुष्य है। बुद्धि, तर्क, विज्ञान, यथार्थ आदि सूक्ष्म वृत्तियों को स्थान देकर मस्तिष्क को परिष्कृत किया गया, वहीं नगरीकरण, मशीनीकरण, टेक्नोलॉजी, पाश्चात्य फैशन आदि स्थूल चीजें व्यवहार में आती गई। विश्व आधुनिक होने लगा और इसके साथ मनुष्य अपना कर्ता, उद्धारक व नियंता खुद ही बन गया। अब वह अपने किए का भार किसी अन्य पर नहीं डाल सकता, न ही कोई मसीहा मदद के लिए आयेगा। क्योंकि ईश्वर, धर्म, आस्था, विश्वास, भाग्य, परम्परा, संस्कृति जैसे सभी आधार उसी ने असामन्य कर दिये थे।

भारत में आधुनिकता का आना भी विचित्रता-सा रहा। आधुनिकता सुख के सपने दिखाती है तो जरूरी है पहले व्यक्ति और समाज कष्ट में हो। भारत में ऐहिक कष्टों को महत्त्व नहीं दिया जाता और भौतिक सुखों की बहुत तीव्र लालसा भी नहीं है। संतोष, सदा जीवन, अपरिग्रह, त्याग, दान आदि वृत्तियाँ हमारे आचरण का हिस्सा है। यूरोपियनों ने हमें समझाया कि जाने हम कष्ट में हैं, दु:ख में हैं और सुखी होने के लिए दौड़ लगानी है। यह दौड़ सबको साथ लेकर नहीं, एक दूसरे को गिराते हुए लगानी है। सुख भौतिकता से ही मिलेगी और इसके लिए प्रकृत्ति का दोहन करना होगा। प्रकृत्ति कोई ईश्वर या दैवीय शक्ति नहीं है। प्रकृति मनुष्य के भोग के लिए है।

एक से दो शताब्दियों में इस ज्ञान कि दुंदभी चहुंदिश सुनाई देने लगी। ज्ञान व बुद्धि के रथ पर बैठा मनुष्य प्रगति की लम्बी यात्रा तय कर गया। पर यहीं से इसके कुछ साइड एफेक्ट्स भी लक्षित हो चले। भौतिक विकास, आर्थिक समृद्धि, इहलौकिकता की तीव्र गति ने आदर्शों व मूल्यों की भेंट चढ़ा दी, प्रत्युत अपना भी कोई आदर्श प्रस्तुत नहीं कर पाई। इस प्रकार आधुनिकतावादी विकास अन्तर्विरोधों का कारण बनता रहा और कृत्रिमता, दिखावटीपन, औपचारिकता, यांत्रिकता, घुटन, संत्रास आदि प्रवृत्तियाँ मन में घर करने लगी। खंडित व्यक्तित्व, सम्बन्धों का विघटन और जुड़े रहने की छटपटाहट लोगों में ऊब बनकर उभरी और इस प्रकार आधुनिकता की तीव्र प्रतिक्रिया से उकता कर अब लोगों का मोह आधुनिकता से भंग होने लगा है। यूरोप ने आधुनिकता की असफलता की घोषणा करके उत्तर-आधुनिकता के प्रारम्भ की बात कह दी है। भारत की हालत खराब है वह एक साथ तीन अवस्थाओं को जी रहा है, मध्यकालीन मानसिकता पूर्णतया छूट नहीं पा रही, आधुनिकता ओढ़ ही रहा था कि छोड़नी पड़ रही है, उत्तर आधुनिकता समझ की बात नहीं।

आधुनिकता के जन्म में ही उसके अवसान के कारण छुपे हुए थे। आधुनिकता ने मनुष्य को सब आधारों से रहित करके रख दिया था। धर्म, नैतिकता, संस्कृति, भाग्य और ईश्वर भले ही आधुनिकता के पैमाने पर खरे न उतरते हों, यूरोप में विज्ञान और बुद्धि की कसौटी पर ठीक न बैठते हों, पर मनुष्य को सुखी रखने के आधार थे। भारत ने इन विषयों पर गहन चिंतन पहले ही कर लिया था। यह भारतीय मनीषा का ही कमाल था कि मानवोचित कल्याण के तत्त्वों धर्म, संस्कृति व मूल्यों का फलेवर लगाकर प्रस्तुत कर दिया जाता था। हमारे यहाँ आधुनिकता के तत्त्व वैदिक काल से मिल जाते हैं। बुद्ध, कौटिल्य, कबीर, नानक, गोरख, जम्भेश्वर, मीरा आदि आधुनिक व्यक्तित्व है। यहाँ इस आधुनिकता को आधुनिकता नहीं माना जा रहा। यूरोप में धर्म आधुनिकता या विज्ञान के प्रतिकूल थी, बल्कि चर्च विज्ञान विरोधी बनकर कार्य करता था। 'सृष्टि केवल दो हजार वर्ष पुराना है' 'धरती चपटे आकार की है', 'सूर्य

पृथ्वी का चक्कर लगाता है', जैसी विज्ञान विरोधी मान्यताएँ, धार्मिक दर्शन के खराब तर्क आदि के कारण यूरोप ने धर्म को विज्ञान में अड़चन जाना। इसके विपरीत भारत में धर्म, पूजा-उपासना विधि का ही नाम नहीं था, बल्कि यह कर्त्तव्य से जुड़ा था। 'धारयेति इति धर्मः' अर्थात् जिसे धारण किया जा सके वह धर्म है। धर्म पूरे विश्व के लिए, समस्त प्राणियों के लिए होता है। धर्म का अभिप्रायः यह है कि जीवन को ठीक से कैसे जीना है? इसके विपरीत पंथ, सम्प्रदाय, मजहब, रिलिजन को भी धर्म का पर्याय मान लिया जाता है, जो कि पूर्ण सही नहीं। मजहब, सम्प्रदायादि में एक प्रणेता, एक धार्मिक पुस्तक तथा विशिष्ट पद्धति होती है। महत्त्वपूर्ण बात है कि पद्धति के अनुसार विश्व दो भागों में बटता ही है, उसके मानने वाले और दूसरे उसे नहीं मानने वाले। बहुत से सम्प्रदाय दुनिया में हैं - विष्णु सम्प्रदाय, सिक्ख सम्प्रदाय, जैन सम्प्रदाय, मुस्लिम सम्प्रदाय, ईसाई सम्प्रदाय, बौद्ध पंथ, शैव सम्प्रदाय, यहूदी सम्प्रदाय आदि। जो सनातन धर्म है उसका कोई नाम ही नहीं है, केवल विशेषता लगा है सनातन अर्थात् लम्बे समय से चला आ रहा। किसी के विरूद्ध नहीं, कोई एक प्रणेता नहीं, कोई एक धार्मिक ग्रंथ/पुस्तक नहीं और न ही कोई विशिष्ट पद्धति। यह विश्व को दो भागों में नहीं बांटता। सबके लिए है, मनुष्यों के लिए, पशु-पक्षियों के लिए एवं प्रकृति के लिए। वेदकालीन ऋषि कहता है -

'संगच्छहवं संवदहवं सं वो मनासि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते॥(ऋग्वेद)

अर्थात् हम सब एक साथ चलें, आपस में संवाद करें, हमारे मन एक हों। कह सकते हैं कि ऐसा चिंतन सबके हितार्थ है। जबकि हिन्दू धर्म में ही बहुत से पंथ और सम्प्रदाय हैं, जैसे शैव सम्प्रदाय, प्रणेता लवकुलीश है तथा ग्रंथ शिव पुराण हैं। ऐसे ही इस्लाम में मोहम्मदसान, कुरान और उनकी विशिष्ट पद्धति है। सभी पंथों, मजहबों और सम्प्रदायों ने भी मानवता को समय-समय पर उचित यह दिखाने का कार्य किया है।

भारत में धर्म की अनदेखी कर आधुनिकता अपनाने के कारण जहाँ मनुष्य मस्तिष्क संकट ग्रस्ट हो गया है, वहीं आधुनिकता ने समाज व्यवस्था और प्रकृति को भी बहुत नुकसान पहुँचाया। आधुनिकता ने कहा कि प्रत्येक मनुष्य को अपना 'क्रूस' स्वयं ही ढोना पड़ेगा तो उसने रिश्ते-नातों को कम कर लिया। सामाजिकता का ताना-बाना टूट गया। प्रकृति जहाँ हमारे लिए पूज्य थी। नदी, जल, पर्वत, वृक्ष, मिट्टी यहाँ पूजनीय थे, वहीं आधुनिकता ने प्रकृति को अपनी दासी माना और जबरदस्त दूहा। हमारे ऋषि बड़े रिसर्चर थे उन्होंने रिसर्च के आधार ही विज्ञान आधारित बातों को सामने रखा। उसी प्राचीन विज्ञान को समाज के प्रचार-प्रसार के लिए सामान्य ब्याले की पहुँच हेतु धर्म के पैकेज के रूप पहुँचाया जाता था। हमारे संत, महात्मा, मुनि आदि सुधारक थे। वे निगरानी करते थे कि रिसर्चर अर्थात् ऋषियों द्वारा प्राप्त ज्ञान को जन-सामान्य ग्रहण कर रहा है या नहीं? तो वे अपनी शिक्षाओं से बात को आगे पहुँचाते थे। बात-बात में सीख दे जाते थे। - 'जीव दया पाळणी, रूंख लीलो न घावै।' (गुरु जम्भेश्वर)

इसी प्रकार -

जल में कुंभ कुंभ में जल है, बाहर भीतर पानी।
फुटा कुंभ जल जल ही समाना, यह तत्त वह्यो ज्ञानी॥ (कबीर)

इसी प्रकार - **मन चंगा तो कठौती में गंगा (रैदास)**

स्पष्ट है कि संतादि लोग प्रकृति, मन शुद्धि और अद्वैतवाद जैसे विषयों को आमजन को अपनी वाणियों द्वारा सीखा-बता रहे थे। यह भारतीय धरा है, जहाँ धर्म को हटाकर किसी विषय पर बात करना आत्मा को निकाल कर शरीर से सम्बन्ध जोड़ना है। भारतीय धर्म में लोचशीलता है जो बहुत गजब की है। परम आध्यात्मिक युग में घोर भौतिकवादी दर्शन प्रस्तुत करने वाले चार्वाक को ऋषि कहकर स्वीकारा गया। इसे धर्म एवं संस्कृति को किसी अन्य सम्प्रदाय या संस्कृति के साथ मिलाकर उस जैसा व्यवहार करना भारतीय व्यवस्था को कम आंकना है। विश्व भारतीय समाज व्यवस्था व धर्म, संस्कृति को हल्के में लेते आया है। अभी उसे यह जानना है यहाँ की धरती में वह कौन तत्व है जो यहाँ व्यक्ति धन जोड़ना चाहे तो कुछ ही समय में धन का स्वामी हो जाता है और फिर धन को छोड़कर सत्य और परमतत्व को सब मान लेता है।

- डॉ. गोपीराम शर्मा
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय,
श्रीगंगानगर (राज.-335001)

दिग्भ्रमित युवाओं का मार्गदर्शकः सनातन धर्म

किसी भी देश व समाज को बनाने या बिगाड़ने में उस देश की युवा पीढ़ी की मुख्य भूमिका होती है। उसमें ज्यादा उत्साह के साथ नवसृजन की क्षमता होती है। हमारी देश की कुल आबादी का लगभग 65 प्रतिशत युवा है जो 35 वर्ष की आयु से कम है। युवा पीढ़ी और देश का भविष्य एक-दूसरे पर निर्भर करता है।

स्वामी विवेकानन्द युवा पीढ़ी को देश का मुख्य आधार स्तम्भ मानते थे। स्वामी जी ने कहा कि 'युवा वर्ग के सम्मुख एक लक्ष्य स्थापित करना होगा और इस ओर ध्यान देना होगा कि युवकगण उत्साह तथा प्रेरणा के साथ अपनी क्षमता का सदुपयोग कर सकें।' भारत में हर वर्ष 12 जनवरी को स्वामी जी की जयंती पर युवा दिवस मनाया जाता है।

आज का युवा भौतिक सुखों की अति शीघ्र प्राप्ति के लिए लक्ष्यहीन और दिशाहीन हो गया है। लग्जरी लाइफ के शौकीन युवा अनेकानेक गैरकानूनी कार्यों में संलिप्त हो रहे हैं। कॉलेज, यूनिवर्सिटी के युवक-युवतियां, स्मैक, हुक्का इत्यादि भयंकर नशे की चपेट में आ गये हैं।

युवा दिग्भ्रमित क्यों हो रहे हैं? इस विषय पर पुराकाल में भी मनीषियों ने विभिन्न ग्रन्थों में विशद् चर्चा की है। 'शुकनासोपदेश' में मन्त्री शुकनास राजकुमार चन्द्रापीड को उपदेश देते हुए युवावर्ग के दिग्भ्रमित होने के चार प्रमुख कारण मानते हैं-

गभेश्वरत्वमभिनवयौवनत्वमप्रतिमरूपत्वममानुष-
शक्तित्वञ्चेति महतीयं श्वल्वनर्थ परम्परा।
सर्वाविनयानामेकैकमप्योषामायतनम् किमुत
समवायः। यौवनारम्भे च प्रायः
शास्त्रजलप्रक्षाननिर्मलापि कालुष्यमुपयाति बुद्धिः।[1]

अर्थात् जन्मतः प्राप्त ऐश्वर्य, नई जवानी, अनुपम सौन्दर्य और अलौकिक शक्ति- यह निश्चय ही अनर्थो की महान परम्परा है। इनमें से एक-एक भी सभी प्रकार के अविनयों के निवास स्थान हैं, (इनके) समूह का तो कहना ही क्या? युवावस्था के आरम्भ में (मनुष्य की) बुद्धि शास्त्र रूपी जल से धुल कर निर्मल होने पर भी प्रायः कलुषित हो जाती है।

वर्तमान की युवा पीढ़ी अशिष्टता, उदंडता, अनैतिकता का प्रतीक बनकर रह गयी है। उनके रहन-सहन सामाजिक व्यवहार में निरंतर गिरावट आ रही है। आधुनिकता की चकाचौंध में युवा पीढ़ी के कदम डगमगाते दिखाई दे रहे हैं। डिजिटल युग में नई पीढ़ी सोशल मीडिया का अनुचित प्रयोग करके संस्कारहीन और किंकर्त्व्यविमूढ़ हो गयी है। अबोध बालकों को विभिन्न मोबाइल गेम की लत लग गयी है जिसके कारण उनका स्वभाव चिड़चिड़ा हो रहा है। अल्पवयः क्राइम की दुनिया में जा रहे हैं। दूरदर्शन, मोबाइल इत्यादि पर अनेक नाटकों, धारावाहिकों के नाम पर पाश्चात्य जीवन शैली का जहर परोसा जा रहा है। फलतः संयुक्त परिवार विखण्डित हो रहे हैं। अभावों में पल रही युवा पीढ़ी चलचित्रों के माध्यम से जब संघर्ष, नैतिकता के नये तरीकों, विद्यार्थियों की स्वतंत्रता तथा प्रेम प्रसंगों को देखती है तो उसका अनुभवहीन भावुक मन इनकी तरफ शीघ्र ही आकृष्ट हो जाता है। इस काल्पनिक महत्वकांक्षा के कारण वह शनैः शनैः अध्ययन से विमुख कुत्सित मार्ग पर चल पड़ता है।

वर्तमानकालिक युवा वर्ग के समक्ष सबसे बड़ा प्रश्न आधुनिक और परम्परागत मूल्यों में द्वन्द्व है। वह खान-पान, वेशभूषा, रहन-सहन, मेल-मिलाप तथा शादी ब्याह के परम्परागत रीतियां, सच्चाई, ईमानदारी सादगी इत्यादि परम्परागत मूल्य अपनाये अथवा आधुनिक जीवन मूल्य जिसमें प्रदर्शन और दिखावा वाले भौतिकतावादी मूल्यों को आत्मसात् करे। इस स्थिति में युवावर्ग कुण्ठित हो रहे हैं। फलतः असंतोष और पारिवारिक विद्वेष बढ़ते जा रहे हैं।

इस 'जनरेशन गैप' पर यथोचित मंथन कर मध्यम मार्ग अपनाने की आवश्यकता है। सनातन धर्म, संस्कृति, दर्शन परम्परा और आधुनिकता का मञ्जुल सामञ्जस्य होना आवश्यक है। इस दिशा में सरकार

को चाहिए कि भारतीय जीवन मूल्यों को पाठ्यक्रम में उचित स्थान दें। कॉन्वेंट स्कूल में भी सनातन धर्म के मूल्यों का पाठ पढ़ाया जाए। कठोपनिषद् में पिता-पुत्र सम्बन्ध का कितना सुन्दर आदर्श प्रस्तुत किया है। जब वाजश्रवा कुपित होकर अपने पुत्र नचिकेता को मृत्यु को प्राप्त करने का श्राप दे देता है, तथापि नचिकेता की पितृभक्ति द्रष्टव्य है-

शान्तसंकल्पः सुमना यथा स्यात्....।[2]

अर्थात् यमराज के तीन वर प्रदान करने पर प्रथम वर के रूप में अपने पिता के प्रसन्नचित होने का वर ही मांगता है।

आदर्श भ्राता के रूप में भरत चौदह वर्ष तक राम की चरणपादुका सिंहासन पर रखकर शासन करते हैं। लक्ष्मण के मूर्छित होने पर राम की उक्ति भी अत्यन्त मार्मिक है।

देशे देशे कलत्राणि देशे देशे च बान्धवाः।
तं तु देशं न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदरः॥[3]

अर्थात् प्रत्येक देश में स्त्रियां मिल सकती हैं, जाति-भाई-बन्धु-बान्धव भी प्राप्त हो सकते हैं किन्तु ऐसा कोई देश दिखाई नहीं देता जहां सहोदर मिल सके।

रामायण में स्त्रियों के लिए भी अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किये है। स्त्रियों के लिए तो न पिता, न पुत्र, न माता, न सखीजन- यहां तक कि अपनी आत्मा की भी गति नहीं है। इस लोक में तथा परलोक में स्त्री के लिए एकमात्र पति ही गति है। पति आभूषण से अधिक नारी की शोभा बढ़ाने वाला है -

भर्ता नाम परं नार्या शोभनं भूषणादपि।[4]

इस प्रकार के आदर्श जीवन मूल्यों, सम्बन्धों का सोशल मीडिया, संगोष्ठियों, छात्रों के पाठ्यक्रम में शामिल कर अधिकाधिक प्रचार-प्रसार किया जाए तो वो दिन दूर नहीं जब भारत पुनः विश्व गुरु के पद पर प्रतिष्ठित हो जाएगा।

संदर्भः

1. शुकनासोपदेश (कादम्बरी पूर्वार्द्ध भाग)
2. कठोपनिषद् 1-10
3. सुन्दरकाण्ड रामायण
4. सुन्दरकाण्ड रामायण

-डॉ. सुनील कुमार बिश्नोई
प्राध्यापक
रा.उ.मा. विद्यालय, सूरतगढ़,
श्रीगंगानगर (राज.)
मो.: 8432227332

पंजाब प्रदेश में निवासरत बिश्नोइयों के ग्रामों के नाम

तह. अबोहर, जिला फाजिल्का में गांव

1. सितोगुन्नो
2. हिम्मतपुरा
3. मेहराणा
4. मोडीखेड़ा
5. बजीदपुर भोमा
6. रामपुरा
7. नारायणपुरा
8. बिशनपुरा
9. खैरपुर
10. सुखचैन
11. सरदारपुरा
12. दूतारांवाली
13. रायपुरा
14. राजांवाली
15. दोदेवाला
16. हरिपुरा
17. पन्नीवाला माहला
18. गुमजाल
19. झूरड़खेड़ा
20. दलमीरखेड़ा
21. दीवानखेड़ा
22. खुईखेड़ा रुकनपुरा
23. पंजावा
24. धरांगवाला
25. कुलार

जिला मुक्तसर साहिब

1. तरमाला
2. कंदूखेड़ा

गोत्र - कड़वासरा, गोदारा, डेलू, जाणी, मंडा, धारणिया, धत्तरवाल, सिंवर, लेघा, मोगा, बोळा, मांझू, सिहाग, माल, बागड़िया, थापन, जाखड़, पूनियां, सहारण, खीचड़, भादू, इसरवाल, आमरा, भाम्भू गीला, बैनीवाल, काकड़, जादूदा, पंवार, खिलेरी, सांवक, तरड़, सिगड़, धायल, कालीराणा, नैण, राहड़, ऐचरा, डारा, थालौड़, चाहर, सहू, सुथार, गायणा।

- **वेदप्रकाश (दीपक) सहारण,** गांव - बिसनपुरा ढाणी, अबोहर (पंजाब)

जन्मशताब्दी दिवस

कामरेड स्व. सहीराम जी जौहर

अमर ज्योति पत्रिका के प्रथम सम्पादक रहे कामरेड सहीराम जौहर का जन्मशताब्दी दिवस माघ सुदी पूर्णिमा विक्रमी संवत् 2079 रविवार तदनुसार 5 फरवरी, 2023 को है। संयुक्त पंजाब एवं वर्तमान हरियाणा के हिसार क्षेत्र में सकारात्मक पत्रकारिता के ध्वजवाहक रहे कामरेड सहीराम जौहर का जन्म 5 फरवरी, 1923 को हुआ था। उन्होंने हरियाणा के जिला हिसार के क्षेत्र में सन् 1942 भारत माँ की गुलामी से लेकर निरंतर 2008 तक एक पत्रकार के रूप में स्वतंत्रता और संस्कारों की पुरजोर अलख जगाए रखी। आज जून, 1950 से निरंतर 74 वर्षों से बिश्नोई सभा हिसार द्वारा प्रकाशित होती आ रही 'अमर ज्योति' मासिक हिन्दी पत्रिका के संस्थापकों में से एक रहने के साथ साथ पत्रिका के प्रथम सम्पादक के पद को भी उन्होंने सुशोभित किया।

सौभाग्य की बात है कि इस वर्ष 5 फरवरी, 2023 को कामरेड सहीराम जौहर का जन्म शताब्दी महोत्सव मनाया जा रहा है। सन् 1942 से 2008 तक निरंतर 66 वर्ष पत्रकारिता के ध्वजवाहक रहे। देश की स्वतंत्रता के लिए जीवन भर अनेकानेक चुनौतियों का सामना किया। स्वतंत्रता के बाद भी मार्गदर्शन, शिक्षा, समाज सेवा का कार्य रूका नहीं था बल्कि जाम्भाणी संस्कारों की शिक्षा देते रहे। कठिन समय में उन्होंने निरंतर अपनी सेवाओं की उपलब्धि जारी रही।

धार्मिक एवं देशभक्ति की भावना रखने वाले समाजसेवी व्यक्ति हिसार जिले के गाँव खैरमपुर निवासी सम्पन्न किसान श्री उदाराम जी जौहर और श्रीमती राजो देवी बिश्नोई जौहर के घर पर 5 फरवरी 1923 को कामरेड सहीराम का जन्म हुआ। कामरेड सहीराम सहित तीन भाई देशभक्त उदाराम के बेटे थे। तीनों ने ही उत्तम कर्म व देशभक्ति के संस्कार पिताश्री उदाराम जी से पाए। कामरेड सहीराम के भाई चौ. ख्याली राम जौहर और श्री भागीरथ जौहर थे। वे दोनों भाई भी स्वतंत्रता सेनानी थे। सन् 1932 में महात्मा गाँधी जी द्वारा चलाये जा रहे नागरिक अवज्ञा आन्दोलन के दौरान शामिल होने पर स्वतंत्रता सेनानी श्री ख्यालीराम को गिरफ्तार कर लिया गया और छः माह जेल की सजा दी गई। दूसरे भाई भागीरथ जो ब्रिटिश आर्मी में थे। वे सरकार के विरुद्ध विद्रोह करके भारतीय राष्ट्रीय सेना में शामिल हो गये। परिणाम स्वरूप सन् 1946 में उन्हें गिरफ्तार करके गुपचुप तरीके से उनकी हत्या कर दी गई। यही नहीं उनका शव भी परिजनों को उपलब्ध नहीं करवाया गया।

उदाराम जौहर के सबसे छोटे बेटे कामरेड सहीराम जौहर स्वयं अपने जीवन की संघर्ष गाथा थे। उनके दिलो-दिमाग में मात्र आजादी छायी रहती थी। सहीराम जी जौहर जन्म से ही महान विचारों के धनी व स्वयं समाधान थे। वे नेक दिल बड़े भले इंसान भी थे। बचपन के बाद से ही उनका जीवन संघर्षपूर्ण रहा। उन्होंने बेहद कठिन हालतों में अपना जीवन व्यतीत कर अनेकों मुकाम हासिल किए। उन्होंने विद्या प्रचारिणी संस्था से शिक्षा प्राप्त की। मन, वचन और कर्म के विचारों और संघर्ष से ही खिताब और दिशा कामरेड की पाई थी। उन्होंने मात्र 14 वर्ष की आयु में ही महान संकल्प शक्ति धारण कर ली थी। उन्होंने ये समझ लिया था कि श्रम और संकल्प से सब कुछ सम्भव है, प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने गुलामी के जमाने और कठिन परिस्थितियों में पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ से 1942 में प्रभाकर की उपाधि प्राप्त की थी। मात्र 19 वर्ष की आयु में देश और निज परिवार का हित समझ करके हर उत्तम कर्म किया था। उन्होंने ग्राम सेवक समाचार पत्र में ईमानदारी, लग्न और कर्तव्यनिष्ठा से बेहद सराहनीय कार्य किया। लाला हरदेव सहाय से उन्हें बहुत ही सही सुंदर मार्गदर्शन मिला। इस समाचार पत्र में प्रूफ रीडर का पद ग्रहण कर कार्य किया।

मेरा सर्वप्रथम कामरेड सहीराम जौहर से साक्षात्कार तब हुआ जब मैं 1976 में दसवीं करके आगे की पढ़ाई के लिये सीसवाल गांव से हिसार आया। मैंने सी.आर.एम. जाट महाविद्यालय में प्रैप कॉमर्स में प्रवेश लिया और श्री गुरु जम्भेश्वर मंदिर में आया तो तरह तरह के प्रश्न दिमाग में आ जा रहे थे। मुझे मंदिर परिसर में चौधरी रामप्रताप जौहर सीसवाल, मुन्शी रामरिख जाणी पिरथला, कामरेड सहीराम जौहर, खैरमपुर, श्री बगड़ावत सिंह माल पिरथला मिले। इन सभी ने एक समान संस्कारात्मक राय दी।

पुराने गवर्नमेंट कॉलेज के आगे वर्तमान अग्रवाल भवन के बराबर मुख्य सड़क के साथ कामरेड जौहर साहिब की अपनी 'नवजीवन प्रिंटिंग प्रैस' (जो आज भी मौजूद है) में वे नित्य काम करते मिलते थे। तब समाचार पत्र का सारा काम हैंडकंपोजिंग से ही होता था। उन्होंने और चौ. रामप्रताप जौहर ने मुझे लिखने का तरीका बताया, प्रोत्साहित किया और कहते रहे कि चाहे थोड़ा लिखो,

लेकिन शुद्ध और सही लिखो। इसके बाद तो कामरेड सहीराम जौहर को मेरे लिखे भजन, गीत की पुस्तिका और श्री गुरु जम्भेश्वर चालीसा पसंद आए तो इन्हें पुस्तक रूप में प्रिंट करवाया और अनेकों लोगों को इस बारे स्वयं बताया। वे मुद्रित पुस्तक आज भी मेरे पास मौजूद है और शायद उनके स्टोर में भी होगी।

जौहर साहब समाज हित और सकारात्मक सोच के साथ विचारशील और पत्रकार भी थे। देशहित के अग्रणी योद्धा और कलमकारी थे। वे स्वतंत्रता के पुरोधा और सच्चे क्रांतिकारी थे। वे गांधीवादी विचारों से ओतप्रोत संस्कारों से अभिभूत स्वभाव से बहुत नर्म थे परन्तु आजादी के लिए सदा सरगर्म रहे थे। समाजहित में वो निरंतर संघर्षरत रहे। सामाजिक कर्म में व्यस्त रहकर धर्म निभाते थे। विक्रमी सम्वत् 1999 से विक्रमी सम्वत् 2065 (सन् 1942 से 2008) तक 66 वर्ष तक निरंतर जीवनपर्यन्त पत्रकारिता के ध्वजवाहक रहे। संयुक्त पंजाब और हरियाणा के हिन्दी भाषा को समर्पित कर्मठ पत्रकार, समाज सुधारक, किसान, मजदूर अर शोषित वर्ग के हकों की आवाज बुलंद की और संस्कारदाता के रूप में कार्य करते रहे। जैन गली हिसार में उनका निवास था। सन् 1955 में कर्मयुग नामक समाचार पत्र चलाया और खूब करिश्मा दिखाया और देश को एक नवविचार वाला समाचार पत्र दिया। सन् 1973 में हरियाणा संघ साप्ताहिक समाचार पत्र शुरू किया। उपरोक्त सभी पत्रों के संपादक, मुद्रक व प्रकाशक कामरेड सहीराम जौहर ही रहे थे।

बिश्नोई सभा हिसार द्वारा वर्ष 1950 में पर्यावरण संरक्षण को समर्पित इस अद्वितीय, अनूठी सामाजिक, पारिवारिक, साहित्यिक, संस्कार जागरण की अग्रदूत जाम्भाणी आध्यात्मिक मासिक हिन्दी पत्रिका 'अमर ज्योति' के प्रकाशन का श्रेष्ठ और सर्वोत्तम कार्य शुभारंभ किया गया। अमर ज्योति पत्रिका न केवल आरम्भ हुई बल्कि आज भी अनवरत रूप से अपने सफर पर अडिग होकर चलती हुई दीर्घकालिक सफर तय कर पाई है। पत्रिका का प्रथम अंक जून, 1950 में प्रकाशित हुआ। विस्तृत विचार-विमर्श उपरांत कामरेड सहीराम जौहर को प्रथम सम्पादक बनाया गया। वे जून, 1950 से 1954 तक चार वर्ष तक 'अमर ज्योति पत्रिका' के अवैतनिक सम्पादक रहे। (अमर ज्योति पत्रिका की स्थापना बारे विस्तृत लेख अमर ज्योति पत्रिका के जनवरी 2023 अंक में उपलब्ध है।)

जौहर साहब को वर्ष 2007 राष्ट्रीय पत्रकार महाधिवेशन में उत्कृष्ट पत्रकारिता हेतु लाईफटाईम अचीवमैंट अवार्ड से भी सम्मानित किया गया। 27 अक्तूबर, 2008 को कामरेड सहीराम जौहर की महान आत्मा हम सबसे जुदा होकर सदगुरु श्रीविष्णु जम्भेश्वरजी के चरणालीन हो गई।

-पृथ्वीसिंह बैनीवाल बिश्नोई
313, सेक्टर 14, हिसार (हरियाणा)
मो.: 9518139200, 9467694029

जन्मशताब्दी

शोध समीक्षा पत्रिका में, बहुत किया है काम।
जौहर जी का जगत में अमर रहेगा नाम॥
पत्रकारिता के स्तंभ थे, संस्कारों की खान।
सभी के हृदय में बसे, बढ़ाया अक्षर ज्ञान॥
काम की पक्की लग्न थी, मेहनतकश इंसान।
देहात में पले बढ़े, सबका मिला सम्मान॥
निर्भयता निडरता से, काम किया दिन रात।
पत्रकारिता खोजी थे, दे गए नई सौगात॥
शोषित वर्गों की खातिर, खोले हक के द्वार।
सभी को जागृत करके, सब का तारा भार॥
जोत प्रेस की बंद हुई, छिने सभी अधिकार।
जनजीवन पस्त किया था सब जन थे लाचार॥
जन सेवा में लगे रहे, सबका किया कल्याण।
ऐसे कर्मयोगी का, सभी करें गुणगान॥
आमजन की सेवा कर, जीवन जिया निष्काम।
जनमन सेवा भाव से, सदा रहेगा नाम॥
स्वाबलंबी श्रद्धानिष्ठ थे, था गीता का भान।
अध्यात्म से जुड़े रहे, दिया सभी को ज्ञान॥
देशभक्त घर में जन्म थे, उत्तम मिले संस्कार।
सभी को जागृत बनाया, बहुत किया उपकार॥
सहीरामजी तो चमकता सितारा है।
जग में बहुत प्यारा है अमर नाम तुम्हारा है॥
जन्मशताब्दी पर कोटि कोटि नमन हमारा है।

-सत्यपाल शर्मा, एडवोकेट
हिसार, मो. 9991852540

कहानी

काश! मैं मोबाइल होती

'काम बहुत था यार आज, बुरी तरह से थक गया हूँ।' – सोफे पर अपना बैग रखते हुए अजीत ने कहा।

'अजीत जल्दी से फ्रेश हो जाओ, तब तक मैं चाय बना देती हूँ।'

'ठीक है, मधु!' कहते हुए अजीत बाथरूम में चला गया।

अजीत के फ्रेश होकर हॉल में आते ही माधुरी चाय-पकौड़े लेकर उसके पास पहुंची। चाय पीते हुए माधुरी ने पूछा- 'अजीत! आजकल आपका घर आना काफी लेट हो रहा है, काम का लोड कुछ ज्यादा है क्या?'

'पूछो मत मधु, कंपनी का दिया टारगेट पूरा करने का बहुत ज्यादा प्रेशर है।' – अजीत ने गहरी सांस लेते हुए कहा।

'अजीत! हमारे घूमने का प्लान कब से है? दो-तीन महीने बाद चलने को बोले थे, पर ऑफिस के कामों में तो आप भूल ही गए इसे।'

'क्या यार, तुम्हें घूमने की पड़ी है! यहाँ काम का इतना प्रेशर है कि सुबह ऑफिस जाने के बाद लेट नाइट आना होता है।' अजीत ने उखड़े मूड में जवाब दिया।

अजीत का गुस्सा देख माधुरी ने चुपचाप चाय खत्म की और किचन में चली गई। इधर अजीत भी अपने स्मार्टफोन (मोबाइल) में बिजी हो गया। डिनर तैयार होने के बाद माधुरी ने अजीत को कई बार आवाज दी, परंतु अजीत अब भी अपने स्मार्टफोन में लगा रहा। माधुरी को ये समझ में नहीं आ रहा था कि अजीत वास्तव में बिजी है या उसे अनसुना कर रहा है। खैर, कुछ समय बाद अजीत डाइनिंग टेबल पर आया और फिर दोनों ने डिनर किया।

थोड़ी देर बाद दूध की गिलास लेकर माधुरी बेडरूम में आई। वहां पहले से मौजूद अजीत को फिर से मोबाइल में बिजी देख माधुरी का गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया। परन्तु उसने अपने आपको शांत रखते हुए दूध के गिलास को टेबल पर रखकर रूम को व्यवस्थित करने में लग गई और उधर अजीत अपने स्मार्टफोन में लगा रहा। थोड़ी देर बाद कमरे में छाई शांति को खत्म करते हुए माधुरी ने कहा- 'फोन में क्या कर रहे हो अजीत, जब से आए हो तब से फोन में लगे हो।'

'कुछ नहीं मधु, ऑफिस के कुछ ई-मेल चेक करके फ्री हुआ तो सोचा जरा सोशल मीडिया की प्रोफाइल चेक कर लूँ। यार, सुबह से टाइम ही नहीं मिला। किसी यार-दोस्त के पोस्ट पर लाइक, कमेंट करने का।'

'हाँ, क्यों नहीं अजीत, आभासी दुनिया के यार दोस्तों की भी खैर-खबर जरूरी है, भले ही.....!' – माधुरी ने तंज कसते हुए कहा।

'भले ही क्या मधु.....?' माधुरी के अधूरे शब्दों पर अजीत ने टोका।

'कुछ नहीं अजीत, आप अपना काम करो। आपके लिए सिर्फ ऑफिस का काम और आभासी दुनिया के मित्र-यार ही है, हम तो कुछ भी नहीं।'

माधुरी को बीच में टोकते हुए अजीत ने कहा- 'प्लीज, फालतू दिमाग मत खराब करो! पता नहीं तुम्हें कितनी बेरोजगारी है, ऊपर से ऑफिस में इतना कम्पीटीशन और रही बात ऑफिस के कामों की तो मैं खुद के लिए जॉब नहीं करता, बल्कि परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए करता हूँ।'

'सहमत हूँ अजीत की नौकरी में काम का प्रेशर बहुत रहता है। खासकर जब नौकरी प्राइवेट हो तो और भी ज्यादा। आप ये प्रेशर हमारी खुशियों के लिए लेते हैं। परन्तु, मुझे इन खुशियों के साथ-साथ आपके दो पल भी चाहिए जिसमें मैं अपने दिल की बात आपसे कह सकूं।' – माधुरी ने कहा।

'पर मधु..... !'

'पररररर..... कुछ नहीं, अजीत मैं आपसे आपके फुर्सत के दो पल चाहती हूं जिसमें मैं आपसे अपने दिल की बात कह सकूँ। लेकिन, आपका अधिकतर समय अपने ऑफिस में और उससे बचा समय मोबाइल संग बीतता है। आपके साथ रहकर भी मैं खुद को अकेला महसूस करती हूँ और मन-ही-मन यही सोचती हूँ कि काश, मैं आपकी बीवी ना होकर आपका मोबाइल होती, जिसे आसानी से आपके दो पल मिल जाते हैं।' इतना कहते-कहते माधुरी के कंठ भर आए और उसने खुद को चादर में छुपा लिया और इन हालत में अजीत भी खुद को असहज महसूस करने लगा।

-अंकुर सिंह

हरदासीपुर, चंदवक, जौनपुर-222129, उ.प्र.

मो. 8367782654, 8792257267

ईमेल -ankur3ab@gmail.com

ग्राम कायागांव में श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन

हरदाः अंतर्राष्ट्रीय कथावाचक एवं राजस्थान के लालासर साथरी धाम के महंत संत स्वामी सच्चिदानंद जी आचार्य के मुखारविंद से समस्त गीला परिवार द्वारा ग्राम कायागांव, जिला हरदा, मध्यप्रदेश में सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन किया गया। कथा का रसपान सभी सामाजिक बंधु एवं भक्तजनों ने सात दिवस तक किया। कथा के दौरान श्री कृष्ण जन्मोत्सव, कृष्ण विवाह एवं राजा परीक्षित की कथा एवं विश्नोई धर्म के प्रवर्तक श्री गुरु जंभेश्वर भगवान द्वारा दिए गए उपदेशों पर भी प्रकाश डाला गया। कथा के छठवें दिन आचार्य श्री के विशेष आह्वान पर युवा ग्रुप 'ओनली 29' के द्वारा हरे वृक्षों के लिए प्राण न्योछावर करने वाली मां अमृता देवी बिश्नोई एवं उनके साथ वृक्षों की रक्षा के लिए बलिदानी 363 लोगों की स्मृति में 363 यूनिट रक्तदान किया गया जिसमें 100 यूनिट समाज की महिलाओं एवं 263 यूनिट पुरुषों के द्वारा रक्तदान किया गया। इस

उपलब्धि पर आचार्य श्री के द्वारा ओनली 29 ग्रुप के सभी सदस्यों को प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

खातेगांव में दो दिवसीय वार्षिक जंभेश्वर महोत्सव का आयोजन

देवास- बिश्नोई समाज खातेगांव मंडल द्वारा आयोजित वार्षिक जम्भेश्वर महोत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया गया, जिसमें मध्यप्रदेश बिश्नोई सभा के अध्यक्ष श्री आत्माराम पटेल, न्याय समिति अध्यक्ष हीरालाल पटेल, गौशाला अध्यक्ष रामदास पंवार, विधायक आशीष शर्मा, पलकराम भादू, जगदीश बिश्नोई (अध्यक्ष बिश्नोई मंडल खातेगांव), रामभरोस खिलेरी, लक्ष्मीनारायण पंवार, नानक राम बैनीवाल, आशीर्वाद दाता महंत स्वामी भगवान प्रकाश महाराज, महंत कृष्णानंद (नेमावर आश्रम), लक्ष्मीनारायण महाराज, रामसुखदास महाराज के सान्निध्य में सफलतापूर्वक पूर्ण हुआ। सभी वक्ताओं ने अपने-अपने विचार मंच पर रखे। सभी ने नारी शिक्षा सम्मान और सुरक्षा के साथ ही संस्कारवान समाज की अगली पीढ़ी तैयार हो, इस पर सभी का

ध्यान दिलाया गया। नवयुवकों को नशे की वृत्ति से बचाकर रखने के विषय पर भी चिंतन व मनन किया गया। मंच संचालन राजेश पंवार (सचिव) ने किया। आभार आचार्य रामसुख बैनीवाल ने व्यक्त किया। युवा नेतृत्व में हेमू बैनीवाल के सान्निध्य में कार्य सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

बिश्नोई समाज के प्रमुख धाम

उनतीस धर्म नियम

- तीस दिन सूतक रखना।
- पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
- प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
- शील का पालन करना व संतोष रखना।
- बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- द्विकाल संध्या-उपासना करना।
- संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- पानी, ईंधन और दूध को छान कर प्रयोग में लेना।
- वाणी विचार कर बोलना।
- क्षमा-दया धारण करना।
- चोरी नहीं करनी।
- निन्दा नहीं करनी।
- झूठ नहीं बोलना।
- वाद-विवाद का त्याग करना।
- अमावस्या का व्रत रखना।
- विष्णु का भजन करना।
- जीव दया पालणी।
- हरा वृक्ष नहीं काटना।
- काम, क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
- रसोई अपने हाथ से बनानी।
- थाट अमर रखना।
- बैल बधिया नहीं कराना।
- अमल नहीं खाना।
- तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- भांग नहीं पीना।
- मद्यपान नहीं करना।
- मांस नहीं खाना।
- नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

सम्वत् 2079 फाल्गुन की अमावस्या

लगेगी-19.2.2023 रविवार सायं 4 बजकर 18 मिनट पर
उतरेगी-20.2.2023 सोमवार दोपहर 12 बजकर 35 मिनट पर

सम्वत् 2079 चैत्र की अमावस्या

लगेगी-20.3.2023 सोमवार रात्रि 1 बजकर 47 मिनट पर
उतरेगी-21.3.2023 मंगलवार रात्रि 10 बजकर 52 मिनट पर

महाशिवरात्रि- 18.2.2023 (शनिवार), फाल्गुन अमावस्या मेला- 20.2.2023 (सोमवार) मुकाम, सम्भराथल, पीपासर, कांठ, सोनड़ी, लोहावट, मेघावा, भींयासर। चैत्र अमावस्या मेला- 21.3.2023 (मंगलवार) जाम्भोलाव, लोदीपुर, सोनड़ी, मालवाड़ा, सरनाऊ, गुडामलानी, जाजीवाल धोरा। होली - 7.3.2023, होली पाहळ - 8.3.2023

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/RNP/01/HSR/2023-25

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

वसंत

चावमय लोचन का है चोर
नवल पल्लवमय तरु अभिरामय
प्रलोभन का है लोलुप भाव,
ललित लतिका का रूप ललाम।
मनोहरता होती है मत्ता
मंजरी-मंजुलता अवलोकय
हृदय होता है परम प्रफुल्ल
कुसुम-कुल-उत्फुल्लता विलोक।
कान में पड़ती है रस-धार
सुने कोकिल का कल आलापय
रसिकता बनी सरसता-धाम
देखि अलि-कुल का कार्य-कलाप।
सुरभिमय बनता है सब ओक
हुए मलयानिल का संचारय
भूरि छवि पा जाती है भूमि
पहन सज्जित सुमनों का हार।
गगन-तल होता है सुप्रसन्न
लाभ कर विमल मयंक-विकासय
विहँसती सित-वसना, सित-गात
सिता आती है भूतल-पास।
भव मधुर नव-जीवन-आधार,
लोक-कमनीय विभूति-निवासय
है प्रकृति-नवल-वधु-शृंगार
सुविलसित सरस वसंत-विलास।

मुद्रक, प्रकाशक जगदीश चन्द्र कड़वासरा, प्रधान, बिश्नोई सभा हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 फरवरी, 2023 को मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।

DOREX® Printers 9896011117